A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 30 जून, 2024

04- कितना प्रभावी सोशल मीडिया का झुनझुना

05- कलाकार रीनी धूमल और धूमिल कलाकृतियों का द्वंद्व

06- घाटों के अस्तित्व को बचाए रखने के लिए प्रयास जरूरी...

07- परदे पर भक्ति से भरे गीतों का माहौल थम क्यों गया!

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 21 अंक 293 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्या: म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

उड़ान...

फोटो: गिरीश शर्मा

सुप्रभात

अगर फिर से बनी यह पृथ्वी
गणितज्ञों, विज्ञानविदों
और प्रतापी विजेताओं की तलाश में नहीं
सिर्फ कवियों की प्रतीक्षा में बेचैन होगी पृथ्वी

सृष्टि की हर पुनर्रचना में दुहराया गया है
सभ्यताओं का इतिहास
यहाँ तक कि रूठने- मनाने की
रस्में भी एक सी हुई
पर कविता हर बार नयी लिखी जाएगी

आप क्या सोचते हैं
चिड़िया हर बार एक आवाज में बोलती है
नहीं, कवि हर बार बांचता है
दु:ख के हरकारे की नयी चिट्ठियां।

- राकेश रोहित

लद्दाख में नदी में फंसा टैंक

पांच जवानों की मौत

- अभ्यास के दौरान नदी में अचानक आई बाढ़

बह गए जवान

नई दिल्ली (एजेंसी)। लद्दाख के दौलत बेग ओल्डी इलाके में टैंक अभ्यास के दौरान नदी पार करने समय अचानक जलस्तर बढ़ने से बड़ा हादसा हो गया। इसमें सेना के 5 जवान शहीद हो गये।

शहीद जवानों में एक जेसीओ भी शामिल हैं। रक्षा विभाग के अधिकारी ने मीडिया को बताया कि कुछ जवानों के शव बाहर निकाल लिए गये हैं। घटना शनिवार को तड़के हुई। अधिकारियों ने समाचार एजेंसी को बताया कि शनिवार तड़के लद्दाख के न्योमा-चुशुल इलाके में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के पास अचानक आई बाढ़ के कारण टैंक के डूबने से पांच सैन्यकर्मी शहीद हो गये। अधिकारियों ने बताया कि हादसा लेह से 148 किलोमीटर दूर प्रशिक्षण अभ्यास के दौरान शुक्रवार की देर रात करीब एक बजे हुई। हादसे में टी-72 टैंक पर सवार सैनिक डूब गए।

उन्नाव में भीषण सड़क हादसा, 3 लोगों की मौत

- तेज रफ्तार रोडवेज बस ने ऑटो को मार दी टक्कर, 3 घायल भी

उन्नाव (एजेंसी)। उन्नाव जिले में तेज रफ्तार रोडवेज बस ने ऑटो को टक्कर मार दी, जिसके चलते ऑटो में सवार तीन लोगों की मौत हो गई। तीन लोग घायल हो गए जिनको इलाज के लिए जिला अस्पताल भेजा गया है। शनिवार दोपहर की यह घटना बांगरमऊ कोतवाली

की बताई जा रही है। मरने वालों में दो लोग हरदोई और एक बांगरमऊ ,उन्नाव के रहने वाले बताए जा रहे हैं। शनिवार की दोपहर 12 बजे के आसपास बांगरमऊ हरदोई मार्ग पर गंजमुरादाबाद के पास रोडवेज ने सवारी लेकर जा रही ऑटो को टक्कर मार दी। इसके चलते सुनील कुमार (32) निवासी मल्लावां हरदोई, सुनील कुमार (45) निवासी बांगरमऊ जिला उन्नाव और लक्ष्मण (35) निवासी हरदोई की मौत हो गई और तीन लोग घायल हो गए।

वर्ल्ड कप फाइनल में इंडिया ने साउथ अफ्रीका को 177 रन का टारगेट दिया

विराट कोहली ने फिफ्टी लगाई, अक्षर और शिवम दुबे के साथ 50-50 की साझेदारी

बारबाडोस (एजेंसी)। वर्ल्ड कप फाइनल में टीम इंडिया ने साउथ अफ्रीका को 177 रन का टारगेट दिया है। पावरप्ले में 3 विकेट गिरने के बाद विराट कोहली ने 76 और अक्षर पटेल ने 47 रन की पारी खेली।दोनों के बीच 72 रनों की साझेदारी हुई। इसके बाद विराट और शिवम दुबे के बीच फिफ्टी पार्टनर शिप हुई। दुबे ने 16 गेंदों पर 170 के स्ट्राइक रेट से 27 रन की पारी खेली।साउथ अफ्रीकी स्पिनर केशव महाराज ने 2 विकेट लिए। कगिसो रबाडा, मार्को यानसन और एनरिक नॉर्त्या को एक-एक विकेट मिला। अफ्रीका पहली बार वर्ल्ड कप फाइनल पहुंची है।

केजरीवाल को झटका, फिर बढ़ गई हिरासत

- 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजे गए तिहाड़ जेल
- शुगर की दवाई, टेस्ट किट और घर का खाना ले सकेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल को राउज एवेन्यू कोर्ट ने शनिवार को 14 दिन (12 जुलाई) की न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। दिल्ली शराब नीति केस में सीबीआई ने उन्हें 26 जून को तिहाड़ जेल से गिरफ्तार किया था। 3 दिन की कस्टडी के बाद आज उन्हें कोर्ट में पेश किया गया। शराब नीति केस में सीबीआई केजरीवाल के खिलाफ भ्रष्टाचार से जुड़े मामले की जांच कर रही है। सीबीआई ने आज सुनवाई के दौरान जस्टिस सुनैना शर्मा की अदालत से केजरीवाल की न्यायिक हिरासत

की मांग की, जिसे कोर्ट ने स्वीकार कर लिया।

वे पहले से ही मनी लॉन्ड्रिंग मामले में तिहाड़ जेल में हैं। एडवोकेट ऋषिकेश कुमार ने कहा- अरविंद केजरीवाल को 12 जुलाई को अदालत में पेश किया जाएगा।

बंगाल गवर्नर ने ममता के खिलाफ किया मानहानि का मुकदमा

- कहा-उन्होंने गलत टिप्पणी की, सीएम ने कहा था-महिलाएं राजभवन जाने से डरती हैं

कोलकाता (एजेंसी)। देश में पहली बार राज्यपाल ने सीएम पर मानहानि का केस किया है। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सीवी आनंद बोस ने शुक्रवार

को सीएम ममता बनर्जी और टीएमसी के कुछ नेताओं के खिलाफ कलकत्ता हाई कोर्ट में यह केस किया। एक दिन पहले ममता ने कहा था कि महिलाओं ने उनसे शिकायत की है कि वे राजभवन की गतिविधियों की वजह से वहां जाने से डरती हैं। राज्यपाल-सीएम में लंबे समय से खींचतान चल रही है। लोकसभा चुनाव के बीच 2 मई को राजभवन की अस्थायी महिलाकर्मी ने राज्यपाल पर छेड़छाड़ का आरोप लगाया था। ममता सरकार ने जांच पुलिस को सौंपी थी।

सरकार अब दूध उत्पादन पर भी बोनस देगी: सीएम

गोशाला खोलने में मदद करेगी, जिसने गोमाता पर टेढ़ी निगाह की, उसे छोड़ेंगे नहीं

छिंदवाड़ा (नप्र)। छिंदवाड़ा पहुंचे मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा, अभी तक फसल पर बोनस मिलता है, आने वाले समय में हमारी सरकार दूध उत्पादन पर भी बोनस देगी। जनपद, नगर पालिका और पंचायत स्तर पर आप गोशाला बनाएंगे, हमारी सरकार पूरी मदद करेगी।

सीएम ने कहा, भूल से भी गोमाता पर कोई कष्ट आया तो उसे छोड़ने वाले नहीं हैं। लगातार कार्रवाई चल रही है। हमने 7.5 हजार गोमाता को बचाया। गो माता को कष्ट पहुंचाने पर 1 हजार से ज्यादा को जेल में डाला। 150 से ज्यादा पर रासुका लगाया। जिसने गोमाता पर निगाह टेढ़ी की, उसे हमारी सरकार छोड़ने वाली नहीं है। सीएम शनिवार को अमरवाड़ा विधानसभा के दौरे पर हैं। यहां सिंगोड़ी के हाईस्कूल ग्राउंड में सभा में उन्होंने कहा, हमारे भगवान राम-कृष्ण के जयकारे लगाने से कांग्रेस को बुखार आता है। मुख्यमंत्री ने हर्रई में भी जनसभा को संबोधित किया।

अमरवाड़ा उपचुनाव में कांग्रेस ने रावण की तरह वेश बदला

लोग कहते थे कि छिंदवाड़ा कांग्रेस का गढ़ है, गढ़ नहीं गड़बड़ है। कहते थे छिंदवाड़ा मॉडल दिखाएंगे। ऊपर-ऊपर हवाई जहाज में रहते थे। सिंगोड़ी को नगर परिषद तक नहीं बना पाए। अमरवाड़ा विधानसभा उपचुनाव में आंचलकुंड दरबार से जुड़े धीरन शाह के कांग्रेस कैंडिडेट होने पर सीएम ने कहा, आंचल कुंड के दरबार को सभी प्रणाम करते हैं, लेकिन कांग्रेस ठीक वैसे ही नकली वेश में सामने आई है, जैसे रावण माता सीता को हरण करने आया था। कांग्रेस को घर पहुंचाना है। ये आडंबर करेंगे, झूठ बोलेंगे।

पित्रोदा को वापस लेना कांग्रेस का नकली चरित्र

उन्होंने सैम पित्रोदा को कांग्रेस में वापस लिए जाने पर कहा, कांग्रेस से पूछना कि आपने आदिवासियों के अपमान पर पित्रोदा को बाहर किया था, अब ऐसा कौन सा काम कर दिया कि वापस पार्टी में ले आए। राहुल गांधी के गुरु पित्रोदा की गंदी सोच है। वो कहते हैं कि आदिवासी चेहरों का रंग काला होता है। ये इनका नकली चरित्र है। शर्म आनी चाहिए।

हर्रई में 150 साथियों के साथ कांग्रेस पदाधिकारी बीजेपी में शामिल

हर्रई में सभा के दौरान 150 साथियों के साथ कांग्रेस पदाधिकारियों और सदस्यों ने बीजेपी जॉइन की। मुख्यमंत्री ने सभी को सदस्यता दिलाई। अमरवाड़ा शहर कांग्रेस पर्यवेक्षक अभिषेक वर्मा भी भाजपा में शामिल हो गए।

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव

तैयारियों में जुटी बीजेपी

पुणे की 'महाबैठक' में शाह करेंगे व्यूह रचना, शुरू की तैयारी

मुंबई (एजेंसी)। लोकसभा चुनावों में हार के बाद केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह अगले महीने महाराष्ट्र का दौरा करेंगे। महाराष्ट्र प्रदेश बीजेपी ने विधानसभा चुनावों की तैयारियों के सिलसिले में एक बड़ी बैठक रखी हैं। इस बैठक को केंद्रीय गृह अमित शाह संबोधित कर करेंगे। बीजेपी ने यह बैठक पुणे में रखी हैं। लोकसभा चुनावों में विपक्षी गठबंधन महाविकास आघाडी से पिछड़ने के बाद केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के साथ दिल्ली में महाराष्ट्र कोर कमिटी की बैठक ली थी। महाराष्ट्र बीजेपी की तरफ से हार के कारणों पर चर्चा करने के बाद अब पुणे बैठक के लिए तैयारियां की जा रहा है। राज्य में अक्टूबर में विधानसभा चुनाव प्रस्तावित हैं। 288 सदस्यों वाली विधानसभा में बहुमत का आंकड़ा 145 सीटों का है। महाराष्ट्र बीजेपी के अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले के अनुसार पुणे की बैठक में करीब 4,500 पार्टी पदाधिकारी शामिल होंगे। हमने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से बैठक को संबोधित करने का अनुरोध किया है और वह पुणे आने के लिए सहमत हो गए हैं। इस बैठक में शाह विधानसभा चुनावों को लेकर पार्टी नेताओं और पदाधिकारियों को विजय मंत्र दे सकते हैं। 2019 के चुनावों में बीजेपी और शिवसेना ने मिलकर चुनाव लड़ा था।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 40.3 °c | न्यूनतम 36°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 30 जून 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

अब एक ही केबल से चार्ज होंगे लैपटॉप, फोन और टैबलेट !

सरकार ला रही नया नियम, जल्द बदल जाएगा आपका चार्जर

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार मोबाइल चार्जिंग के नियम में बदलाव करने जा रही है। सरकार के इस तरह के बदलाव का सीधा असर मोबाइल यूजर्स पर पड़ेगा। साथ ही स्मार्टफोन बनाने वाली कंपनियों पर सरकार के नए नियम का असर सबसे ज्यादा देखने को मिलेगा। रिपोर्ट की मानें, तो केंद्र सरकार कॉमन चार्जिंग नियम को लागू करने जा रही है। इससे एक देश में केवल एक तरह के चार्जर की बिक्री होगी। ऐसे में लैपटॉप, टैबलेट और मोबाइल फोन के लिए अलग-

अलग चार्जर की जरूरत नहीं होगी। रिपोर्ट की मानें, तो सरकार टाइप-सी चार्जर को स्टैंडर्ड चार्जर मान सकती है। ऐसे में देश में बिकने वाले सभी तरह के इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस जैसे स्मार्टफोन, टैबलेट और स्मार्ट वॉच में टाइप सी चार्जिंग पोर्ट दिया जा सकता है। सरकार टाइप सी चार्जिंग को अनिवार्य बना सकती है। बता दें कि भारत से पहले यूरोपियन यूनियन की ओर से टाइप सी चार्जिंग को अनिवार्य बना दिया गया है। इस नियम को यूरोपियन यूनियन ने साल 2022 में लागू किया था।

जबलपुर-दिल्ली के बाद राजकोट एयरपोर्ट की कैनोपी गिरी

भारी बारिश की वजह से हादसा,कोई हताहत नहीं, 3 दिन में तीसरी घटना

राजकोट (एजेंसी)। दिल्ली के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट के टर्मिनल-1 के बाद शनिवार को गुजरात के राजकोट एयरपोर्ट की कैनोपी गिर गई। हालांकि हादसे में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। पिछले तीन दिन में एयरपोर्ट पर इस तरह की ये तीसरी घटना है। 28 जून को दिल्ली आईजीआई एयरपोर्ट की कैनोपी हादसे में एक कैब ड्राइवर की मौत हो गई थी, जबकि 8 लोग घायल हुए थे। वहीं मध्य प्रदेश के जबलपुर एयरपोर्ट पर 27 जून को कैनोपी गिरने से एक अधिकारी की कार क्षतिग्रस्त हो गई थी। मानसून के शुरुआत में ही नवनिर्मित एयरपोर्ट की कैनोपी गिरने से घटिया निर्माण कार्य की पोल भी खुल गई है। क्योंकि, राजकोट में मानसून कल ही पहुंचा है। मौसम विभाग ने शहर में हल्की बारिश का अनुमान जताया है। सुबह 11 बजे से याग्निक रोड, रेस कोर्स रिंग रोड, कलावड रोड, त्रिकोण बाग, 150 फीट रिंग रोड, राया रोड, साधुवासवानी रोड, माधापार और मुंजका सहित शहर के इलाकों में हल्की बारिश हो रही है। राजकोट शहर से करीब 30 किलोमीटर दूर इस ग्रीनफील्ड इंटरनेशनल एयरपोर्ट का उद्घाटन पीएम मोदी ने पिछले साल 27 जुलाई में किया था। 1,405 करोड़ की लागत से 23,000 वर्गमीटर में बने इस एयरपोर्ट पर हर घंटे 1,280 यात्रियों के संचालन की क्षमता है। इस एयरपोर्ट का पैसेंजर टर्मिनल इतना बड़ा है कि हर घंटे 1,280 यात्रियों का संचालन कर सकता है। एयरपोर्ट पर सोलर पावर सिस्टम, ग्रीन बेल्ट, रेन वॉटर हार्वेस्टिंग जैसी सुविधाएं हैं। यहां से एयरबस ए-380, बोइंग 747, बोइंग 777 जैसे विमान उड़ान भरते हैं।

संक्षिप्त समाचार

नीट पेपर लीक मामले पर सीबीआई का बड़ा ऐक्शन

● झारखंड से पत्रकार को किया गिरफ्तार

नई दिल्ली (एजेंसी)। नीट पेपर लीक में एक तरफ जहां सियासी जंग जारी है, दूसरी ओर सीबीआई ने केस दर्ज करके धड़ाधड़ एक्शन लेना शुरू कर दिया है। एजेंसी ने शनिवार को झारखंड के हजारीबाग से एक पत्रकार को गिरफ्तार किया है। पत्रकार का नाम जमालुद्दीन है, जो कि एक हिंदी न्यूज पेपर के लिए काम करता है। उसे ओएसिस स्कूल के

प्रिंसिपल और वाइस प्रिंसिपल की कथित तौर पर मदद करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। गुजरात में सीबीआई की टीमें गोधरा, खेड़ा, अहमदाबाद, आणंद में सात जगहों पर छापेमारी की है। यह छापेमारी गोधरा पुलिस की एफआईआर के आधार पर की गई है। तयाज आलम को भी गिरफ्तार किया है।

शी जिनपिंग ने की भारत के पंचशील सिद्धांत की तारीफ

● बोले-दुनिया में शांति कायम करने के लिए ये जरूरी

बीजिंग (एजेंसी)। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने दुनिया में बढ़ रहे संघर्षों पर लगाम लगाने के लिए 'पंचशील सिद्धांत' का जिक्र किया। शुक्रवार को पंचशील के सिद्धांतों की स्थापना की 70वीं वर्षगांठ थी। इस अवसर पर

शी जिनपिंग ने शांतिपूर्ण सहअस्तित्व (पंचशील) के 5 सिद्धांतों का जिक्र किया। भारत ने शांतिपूर्ण सहअस्तिव के पांच सिद्धांतों को 'पंचशील' नाम दिया है। ग्लोबल टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक चीनी राष्ट्रपति ने कहा कि पंचशील के पांच सिद्धांतों ने समय की मांग को पूरा किया। उन्होंने कहा कि पिछले 70 सालों में बार-बार यह साबित हुआ है कि चुनौतियों का सामना करने और बेहतर भविष्य बनाने का एक प्रभावी तरीका एकता, सहयोग, कम्युनिकेशन और आपसी समझ को बढ़ाना है।

जेडीयू का बड़ा फैसला संजय झा बनाए गए कार्यकारी अध्यक्ष

● राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में हुई घोषणा

नई दिल्ली (एजेंसी)। जनता दल यूनाइटेड की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक शनिवार को दिल्ली में हुई, जिसकी अध्यक्षता पार्टी प्रमुख

और बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार कर रहे थे। इस बैठक में जेडीयू ने बड़ा फैसला करते हुए नीतिश कुमार के करीबी नेता संजय झा को कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष घोषित किया है। बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने ही पार्टी के इस बड़े फैसले का ऐलान किया है। इस बैठक में पार्टी ने बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर भी बड़ा फैसला किया है और प्रस्ताव पारित कर नीतिश के नेतृत्व को माना है।

पं. प्रदीप मिश्रा ने राधा रानी मंदिर में नाक रगड़कर माफी मांगी

भोपाल (नप्र)। राधा रानी वाले बयान पर विवाद के 20 दिन बाद पंडित प्रदीप मिश्रा ने बरसाना पहुंचकर माफी मांग ली.. वो भी नाक रगड़कर। 29 जून शनिवार को पंडित मिश्रा का बरसाना पहुंचने का पहले से कोई कार्यक्रम तय नहीं था।

वे 28 जून की रात को अचानक दिल्ली रवाना हुए। 29 जून सुबह दिल्ली पहुंचे। यहां उनकी ब्रज धाम के कुछ संतों से चर्चा हुई। इसके बाद वे सीधे 11 बजे बरसाना में राधा रानी के मंदिर में पहुंचे।

दरअसल, गोवर्धन के संतों ने मिश्रा से कहा था कि ब्रज में उनके खिलाफ बेहद गुस्सा है। माफी मांगना ही इसका समाधान है। इसके बाद पंडित मिश्रा ने तय किया कि वे बरसाना जाएंगे। उनके बरसाना पहुंचने से पहले राधा रानी के मंदिर में भारी फोर्स तैनात कर दिया गया। कड़ी सुरक्षा के बीच पंडित मिश्रा राधा रानी के मंदिर पहुंचे।

उधर, ब्रज के संतों को भी सरकार की तरफ से सुबह 11 बजे इशारा मिला कि पंडित मिश्रा बरसाना पहुंचकर माफी मांगेंगे। इस दौरान सुरक्षा व्यवस्था पुख्ता रहे। इसके बाद मंदिर परिसर में पुलिस फोर्स भी पहुंचना शुरू हो गई थी। उस वक्त तक किसी को अंदाजा नहीं था कि आज सुरक्षा क्यों बढ़ाई जा रही है? इसके एक घंटे बाद सड़क मार्ग से पंडित मिश्रा बरसाना पहुंचे। वे सीधे यहां बरसाना में राधा रानी के मंदिर पहुंचे।

पंडित मिश्रा बोले- लाड़ली जी ने खुद ही इशारा कर मुझे बुलाया

राधा रानी के चरणों में दंडवत प्रणाम करने के बाद उन्होंने कहा, मैं राधा-रानी के दर्शन करने के लिए यहां पधारा हूं। लाड़ली जी ने खुद इशारा करके मुझे यहां बुलाया, इसलिए मुझे यहां आना पड़ा। मेरी वाणी से किसी को ठेस पहुंची है, तो उसके लिए माफी मांगता हूं।

24 जून को ब्रजधाम में हुई महापंचायत ने दिया था अल्टीमेटम

24 जून को बरसाना के पद्मश्री रमेश बाबा के गहवर वन क्षेत्र स्थित मान मंदिर में साधु-संत, धर्माचार्य और ब्रज के लोगों की महापंचायत हुई। इसमें आए लोगों ने कहा- प्रदीप मिश्रा ने खुद में बदलाव नहीं किया, तो ब्रज में पैर रखते ही उनका सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा। वो राधा रानी के चरणों में आकर नाक रगड़ें और माफी मांगें।

25 जून को माफी मांगने वाले थे, तय हुआ कि बरसाना जाकर माफी मांगेंगे

इससे पहले 25 जून को सीहोर स्थित कुबेरेश्वर धाम में पंडित मिश्रा ने मीडिया से बातचीत की थी। मीडिया को कुबेरेश्वर धाम के सेवकों ने बताया था कि राधा रानी पर दिए बयान पर पंडित मिश्रा खेद प्रकट करना चाहते हैं। शाम 5 बजे जब पंडित मिश्रा पत्रकारों के सामने पहुंचे तो उन्होंने कहा कि वे सिर्फ कांवड़ यात्रा और गुरु पूर्णिमा के आयोजन के संबंध में जानकारी देंगे। इसके अलावा किसी विषय पर बात नहीं करेंगे। दरअसल, कुबेरेश्वर धाम में उस दिन ब्रज धाम के कुछ संत पहुंचे थे। पत्रकार वार्ता से पहले पंडित मिश्रा की उनसे बात हुई थी, इसलिए पंडित मिश्रा ने मीडिया के सामने कांवड़ यात्रा का जिक्र किया।

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में संस्कृत नाट्य रंग प्रयोग पर केन्द्रित राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन

नाटक मध्यमव्यायोग और कर्णभारम् का हुआ मनमोहक मंचन

भोपाल। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में परफॉर्मिंग आर्ट्स, नाट्यशास्त्र एवं विश्व रंगमंच के विद्यार्थियों के लिए संस्कृत नाट्य रंग प्रयोग पर केन्द्रित ग्यारह दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला विश्वविद्यालय के संस्कृत, प्राच्य भाषा एवं भारतीय ज्ञान परम्परा केन्द्र और मानविकी एवं उदार कला संकाय के संयुक्त तत्वाधान में सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

इस कार्यशाला के अन्तर्गत ग्यारह दिनों में महाकवि भासकृत संस्कृत के दो नाटक मध्यमव्यायोग और कर्णभारम् तैयार किये गये। इस दौरान छात्रों को संस्कृत नाट्य मंचन परम्परा की बारीकियों से विशेषज्ञों द्वारा अवगत करवाया गया। इसमें परम्परागत नाटकों में प्रयोग होने वाले मेकअप और वेशभूषा का भी ज्ञान दिया गया। उनको उच्चारण एवं अभिनय कला के विषय पर विस्तृत रूप से समझाया गया।

आखिरी के दो दिनों में उक्त नाटकों मध्यमव्यायोग और

कर्णभारम् का मनमोहक मंचन हुआ। इस मंचन में प्रसिद्ध रंगकर्मी और मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय के पूर्वनिदेशक आलोक चटर्जी और केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय भोपाल परिसर के निदेशक प्रो. रमाकान्त पाण्डेय, विश्वविद्यालय की प्रतिकुलपति प्रो संगीता जौहरी, डीन डॉ रूचि मिश्रा तिवारी बतौर विशेषज्ञ के रूप में शामिल हुए। आलोक चटर्जी ने नाटक मंचन देखकर कहा कि छात्रों द्वारा जो नाटक में नवाचार किया वह बहुत अद्भुत है। प्रो रमाकान्त पाण्डेय ने भी नाटक मंचन की प्रशंसा की और इन नाटकों को भारत के अनेक स्थान पर करने की सलाह दी। अन्य विशेषज्ञ ने भी छात्रों का प्रोत्साहन किया।

इस कार्यशाला के अंतर्गत आयोजित दोनों नाटकों के मंचन में श्री शरद मिश्रा, अभिषेक देशमाने और नाट्यविद्यालय के स्टाफ और छात्रों का सहयोग देखने को मिला। कार्यशाला में 21 छात्रों ने भाग लिया। कार्यशाला का संयोजन डॉ संजय कुमार दुबे और डॉ सावित्री सिंह परिहार एवं सह संयोजन डॉ दीपक तिवारी ने किया। इसमें नाट्य निर्देशक के रूप में श्री मनोज नायर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

एनटीए की 3 परीक्षाओं की नई तारीखों का ऐलान

● ऑनलाइन मोड में 10 जुलाई से 4 सितंबर के बीच होंगी ● इनमें यूजीसी-नेट, सीएसआईआर-नेट, एनसीईटी शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने शुक्रवार की रात यूजीसी-नेट, सीएसआईआर-नेट और एनसीईटी की परीक्षाओं की नई तारीखों का ऐलान कर दिया गया है। ये एग्जाम 10 जुलाई से 4 सितंबर के बीच होंगे। ये तीनों परीक्षाएं पहले जून में होनी थीं, जो अलग-अलग वजहों से कैंसिल हो गई थीं। नई तारीखों के मुताबिक एनसीईटी का एग्जाम 10 जुलाई को होगा। यूजीसी नेट 21 अगस्त से 4 सितंबर के बीच सीएसआईआर-यूजीसी नेट 25 जुलाई से 27 जुलाई के बीच होगा। इस बार एग्जाम मोड भी ऑनलाइन रखा गया है। रद्द होने से पहले यूजीसी-नेट पेन और पेपर मोड में हुआ था। इनके अलावा ऑल इंडिया आयुष पोस्ट ग्रेजुएट एंट्रेस एग्जाम 2024 तय तारीख यानी 6 जुलाई को होगा। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी यानी एनटीए पहले से ही नीट यूजी 2024 विवाद को लेकर आरोपों से घिरी है। 11 जून को सुप्रीम कोर्ट ने स्टूडेंट शिवांगी मिश्रा और 9 अन्य छात्रों की

याचिका पर सुनवाई की थी। इसे रिजल्ट की घोषणा से पहले 1 जून को दायर किया गया था। कैंडीडेट्स ने बिहार और राजस्थान के एग्जाम सेंटर्स पर गलत क्वेश्चन पेपर्स बंटने के चलते हुई गड़बड़ी की शिकायत की थी और परीक्षा रद्द कर सीबीआई जांच की मांग की गई थी। हालांकि, एससी ने नीट काउंसलिंग पर रोक लगाने से इनकार कर दिया था और एनटीए को नोटिस जारी किया था। कोर्ट ने नीट यूजी 2024 में पेपर लीक, ग्रेस मार्किंग सहित अन्य गड़बड़ियों पर सवाल उठाए थे। जस्टिस विक्रमनाथ और जस्टिस ए. अमानुल्लाह की पीठ ने कहा था कि परीक्षा की पवित्रता प्रभावित हुई है, हमें जवाब चाहिए। नोटिस में बेंच ने केंद्र और परीक्षा कराने वाली एजेंसी से 4 हफ्ते में जवाब मांगा था। नीट पेपर लीक मामले में सीबीआई ने अब तक 5 लोगों को गिरफ्तार किया है। 27 जून को मनीष प्रकाश और आशुतोष पटना से गिरफ्तार किया था। इन्होंने कैंडीडेट को लीक पेपर रटवाने के लिए प्ले स्कूल बुक कराया था। यहीं से पेपर के जले टुकड़े भी मिले थे। 28 जून को हजारीबाग से 3 लोगों की गिरफ्तारी हुई। इनमें ओएसिस स्कूल के प्रिंसिपल एहसान उल हक को भी गिरफ्तार किया है।

एक जुलाई से लागू होंगे तीन नए आपराधिक कानून!

मोदी सरकार की तैयारी पूरी, हर स्तर पर चल रहा प्रशिक्षण

नई दिल्ली (एजेंसी)। तीन नए आपराधिक कानून, भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 को एक जुलाई 2024 से लागू करने की तैयारी पूरी हो गई है। हर स्तर पर प्रशिक्षण

का सिलसिला तेजी से चल रहा है। एफआईआर दर्ज करने सहित नए आपराधिक कानूनों के साथ प्रौद्योगिकी अनुकूलता को सुगम बनाने के लिए मौजूदा सीसीटीएनएस एप्लीकेशन में 23 फंक?शनल संशोधन किए गए हैं। नई प्रणाली में निर्बाध ट्रांजिशन के लिए राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को तकनीकी सहायता प्रदान की जा रही है। नए आपराधिक कानूनों के क्रियान्वयन के लिए राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की निरंतर समीक्षा और सहायता के लिए टीमें और कॉल सेंटर बनाए गए हैं। ऐसे एप्लीकेशन बनाए गए हैं जो सुरक्षित क्लाउड स्टोरेज सपोर्टेड हैं और इसमें अपराध स्थल की वीडियोग्राफी और इनमें फॉरेंसिक साक्ष्य एकत्र करने का प्रावधान शामिल होगा। 14 मार्च, 2024 को आपराधिक कानूनों का एनसीआरबी संकलन नामक मोबाइल ऐप वेब एप्लीकेशन लॉन्च किया गया था, वर्तमान में इसके लगभग 1.2 लाख यूजर्स हैं। नए आपराधिक कानूनों के तहत अपराध स्थलों की वीडियोग्राफी और फोटोग्राफी, न्यायिक सुनवाई और इलेक्ट्रॉनिक रूप से अदालती समन भेजने को सुगम बनाने के लिए ई-साक्ष्य, न्यायश्रुति और ई-समन ऐप विकसित किए जा चुके हैं।

बंगाल गवर्नर ने ममता के खिलाफ किया मानहानि का मुकदमा

● कहा-उन्होंने गलत टिप्पणी की, सीएम ने कहा था-महिलाएं राजभवन जाने से डरती हैं

कोलकाता (एजेंसी)। देश में पहली बार राज्यपाल ने सीएम पर मानहानि का केस किया है। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सीवी आनंद बोस ने शुक्रवार को सीएम

ममता बनर्जी और टीएमसी के कुछ नेताओं के खिलाफ कलकत्ता हाई कोर्ट में यह केस किया। एक दिन पहले ममता ने कहा था कि महिलाओं ने उनसे शिकायत की है कि वे राजभवन की गतिविधियों की वजह से वहां जाने से डरती हैं। राज्यपाल-सीएम में लंबे समय से खींचतान चल रही है। लोकसभा चुनाव के बीच 2 मई को राजभवन की अस्थायी महिलाकर्मी ने राज्यपाल पर छेड़छाड़ का आरोप लगाया था। ममता सरकार ने जांच पुलिस को सौंपी थी।

कमजोर 'पुल' से राजद की राजनीति को मजबूत करेंगे तेजस्वी यादव

9 दिनों में 5 पुल का ध्वस्त होना अब बनेगा चुनावी मुद्दा

पटना (एजेंसी)। बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव नीतिश नीत सरकार पर हमला बदस्तूर जारी रख राजद की राजनीति को आगामी विधान सभा चुनाव हेतु मजबूत करने में जुट गए है। कुछ दिन पहले बढ़ते अपराध पर बरसे तो अब कमजोर पूल उनकी राजनीति को मजबूत करने के कारण बन रहे हैं। फिलहाल नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव के निशाने पर ध्वस्त होते पुल हैं। मुकद्दर के सिकंदर बने तेजस्वी यादव को प्रकृति से भी मदद मिल रही है। एक-एक कर के पुल ध्वस्त होते जा रहे हैं। कुछ दिन पहले अररिया, सिवान और पूर्वी चंपारण के पुल गिरे और अब मधुबनी में भी यह हादसा हो गया। 28 जून यानी शुक्रवार को मधुबनी जिला के झंझारपुर

में बन रहा पुल गिर गया। यह पुल करीब तीन करोड़ की लागत से बन रहा था। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत बिहार सरकार के ग्रामीण विकास विभाग की ओर से निर्माण किया जा रहा था। अररिया के सिकटी मे करोड़ों की लागत से बकरा नदी के पड़रिया घाट पर बना पुल उद्घाटन से पूर्व ध्वस्त हो गया। सात करोड़ उनासी लाख साठ हजार रुपये की लागत से बनने वाले पुल की राशि बढ़ कर 30 करोड़ के पार कर गई।

सीएम डॉ. मोहन यादव बालाघाट पहुँचे

शहीदों को दी श्रद्धांजलि, हॉक फोर्स के 28 जवानों को दिया आउट ऑफ टर्न प्रमोशन

बालाघाट (नप्र)। प्रदेश के मुखिया डॉ. मोहन यादव आज बालाघाट जिले के दौरे पर रहे। वह सुबह करीब 12 बजे पुलिस लाइन स्थित हेलीपेड पर पहुंचे। यहां से सबसे पहले सीएम ने शहीद स्मारक पर पहुंचकर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। इसके बाद पुलिस लाईन में बने मंच पर पहुंचे।

उन्होंने यहां लांजी क्षेत्र अंतर्गत केराझेरी के जंगल में दो कुख्यात नक्सलियों को मारने वाले 28 जवानों (हॉक फोर्स और जिला पुलिस बल) को आउट ऑफ टर्न प्रमोशन दिया। इस कार्यक्रम के बाद मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव फोटो प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

स्थानीय नेताओं ने किया स्वागत- सीएम को बालाघाट पुलिस के जवानों ने गार्ड ऑफ ऑनर दिया। इसके बाद मंच पर स्थानीय नेताओं ने सीएम का स्वागत किया। इसके बाद हॉक फोर्स के जवानों को सीएम ने आउट ऑफ टर्न प्रमोशन का फीता लगाया। यहां कुल 28 जवानों को आउट ऑफ टर्न प्रमोशन दिया जाना है। जिन्होंने अदम्य साहस का परिचय देकर दो नक्सलियों को 1 अप्रैल को मार गिराया था।

बोले- जवानों के साथ खड़ी है सरकार- इसके बाद मुख्यमंत्री मोहन यादव ने हार्ड कोर नक्सलियों को मार गिराने वाले जवानों की सराहना करते हुए कहा कि सरकार जवानों के साथ खड़ी है। उन्होंने नक्सलियों से मुख्य धारा में जुड़कर सरकार की नक्सल आत्मसमर्पण नीति का लाभ लेने की अपील की।इस दौरान उन्होंने पुलिस फोर्स की तारीफ की। उन्होंने कहा कि लंबे समय से हमारी फोर्स ने अपनी सक्रियता के बल पर नक्सली नामक जहर के बीज को उखाड़ फेंकने का काम किया है। अकेले बालाघाट जोन में हमारी फोर्स ने पिछले 5 साल में 19 नक्सलियों को मारकर अपने शौर्य का परिचय दिया है इन सभी के ऊपर 3 करोड़ 5 लाख रुपए का इनाम था।

दुश्मनों के गढ़ में घुसकर किया कार्यक्रम- सीएम ने कहा कि जो अपनी ड्यूटी के दौरान शहीद हुए, उनको नमन करने के साथ ही आउट ऑफ टर्म प्रमोशन देकर हमने अपनी फोर्स को हिम्मत दिलाने का काम किया है। हमने दुश्मनों के गढ़ घुसकर आज का यह कार्यक्रम किया है।

उन्होंने कहा कि पीएम के नेतृत्व में आज पूरा देश दुश्मनों के खिलाफ हमारी भूमिका क्या होगी उसका परिचय दे रहा है। भारत इजराइल और अमेरिका के बाद तीसरा देश है, जो सशस्त्र बलों को सभी प्रकार के संसाधन उपलब्ध कराता है।

1 अप्रैल 2024 को लांजी में हॉक फोर्स ओर जिला बल के माध्यम से दो हार्ड कोर नक्सलियों को ढेर करने का सम्मान हमने पाया है। सीएम ने जवानों को संबोधित करते हुए कहा कि हम फोर्स को कोई भी कमी नहीं होने देंगे। जो आप चाहोगे वो सब देंगे, आप अपनी ड्यूटी निभाते रहें।

बता दें कि जिले में पहली बार नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में पुलिस की जवाबी कार्यवाहियों और प्रशिक्षण पर आधारित फोटो प्रदर्शनी भी लगाई गई। जिसमें नक्सल गतिविधियों को रोकने के लिए पुलिस के प्रयासों की फोटो प्रदर्शित की गई।

मंच पर डीजीपी सुधीर कुमार सक्सेना, सांसद भारती पारधी, विधायक गौरव पारधी, राजकुमार करहि, मधु भगत, विवेक पटेल, पूर्व विधायक गौरीशंकर बिसेन, भाजपा जिला अध्यक्ष और पूर्व मंत्री रामकिशोर कावरे, भगत नेताम, नपा अध्यक्ष भारती ठाकुर, कलेक्टर गिरीश कुमार मिश्रा, पुलिस अधीक्षक समीर सौरभ उपस्थित रहे।

प्रभात झा को दिल्ली एयरलिफ्ट किया

दो दिन से भोपाल में भर्ती थे; सीएम डॉ. मोहन यादव अस्पताल मिलने पहुंचे

भोपाल (नप्र)। बीजेपी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष प्रभात झा की तबीयत बिगड़ गई। उनको एयरलिफ्ट कर दिल्ली ले जाया गया। उन्हें गुरुग्राम के मेदांता अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

इससे पहले सीएम डॉ. मोहन यादव ने बीजेपी के प्रदेश महामंत्री हितानंद शर्मा के साथ बंसल अस्पताल पहुंचकर उनका हालचाल पूछा था। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान भी अस्पताल पहुंचे और डॉक्टरों से झा के स्वास्थ्य के संबंध में चर्चा की थी।

बीजेपी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष प्रभात झा के बेटे अयत्न झा ने बताया कि पिताजी के सभी ऑर्गन्स अच्छे से काम कर रहे हैं। रिपोर्ट्स भी ठीक हैं। लेकिन रात में दिमागी बुखार आया था, इसी वजह से एहतियात के तौर पर मेदांता शिफ्ट किया है। उनका रूटीन ट्रीटमेंट भी मेदांता में ही चलता है।केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान शनिवार सुबह प्रभात झा से मिलने बंसल अस्पताल पहुंचे।

दो दिनों से निजी अस्पताल में एडमिट थे झा

बीजेपी नेताओं की मानें तो प्रभात झा को न्यूरोलॉजिकल परेशानियों के चलते बंसल अस्पताल में दो दिन पहले एडमिट किया गया था। उन्हें आज सुबह करीब 11 बजे भोपाल से दिल्ली के लिए एयर एंबुलेंस के जरिए भेजा गया है। उन्हें गुरुग्राम के मेदांता अस्पताल में एडमिट कराया है।

भोपाल समेत 15 जिलों में तेज बारिश

म.प्र.में स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव, जबलपुर समेत कई जिलों में गिरेगा पानी, ग्वालियर-मुरैना में भी अलर्ट

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में साइक्लोनिक सर्कुलेशन और ट्रफ लाइन की वजह से बारिश का स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव है। इस वजह से पूरा प्रदेश भीग रहा है। भोपाल-इंदौर समेत 15 जिलों में शनिवार दोपहर के बाद तेज बारिश हुई।

मौसम विभाग ने अगले कुछ घंटे में में ग्वालियर, मुरैना और जबलपुर में भी तेज बारिश का अलर्ट जारी किया है। गरज-चमक के साथ बिजली भी गिर सकती है।

शनिवार को प्रदेश में सागर, सीहोर, राजगढ़, बैतूल, विदिशा, गुना, देवास, बालाघाट, सिवनी, पांढुर्णा, अनूपपुर के अमरकंटक, शहडोल, दमोह, मंडला में हल्की गरज के साथ तेज बारिश का दौर जारी था।

वहीं श्योपुरकलां, खरगोन, सिंगरौली, छिंदवाड़ा, इंदौर, पन्ना, जबलपुर, खंडवा, कटनी, सीधी, हरदा, उमरिया, उज्जैन, छतरपुर के खजुराहो, रीवा, डिंडोरी, मंदसौर, अलीराजपुर, रायसेन के सांची और भीमबेटका, धार, आगर, नरसिंहपुर, बड़वानी, शाजापुर, शिवपुरी में भी मौसम बदलने का अनुमान जताया है।

सीहोर में तेज हवाओं के साथ बारिश- सीहोर में शनिवार दोपहर में तेज हवाओं के साथ बारिश शुरू हो गई। इससे पहले यहां 21 जून को करीब 107 एमएम बारिश हुई थी। उसके बाद से लोग गर्मी और उमस से परेशान थे।

सतना-उचेहरा हाईवे कार पर पलटा ट्रक

3 लोगों की मौत, बाल-बाल बची एक मासूम

सतना (नप्र)। सतना-उचेहरा हाईवे पर शनिवार दोपहर करीब 3 बजे हुए एक भीषण सड़क हादसे में कार सवार 3 लोगों की मौत हो गई, एक मासूम बाल-बाल बच गई। हादसा रामवन गमन पथ मार्ग पर ग्राम पथरहटा के पास हुआ।

जानकारी के अनुसार, कार मैहर की तरफ से सतना की ओर आ रही थी। इसी दौरान लोहे के सरिया लोड कर जा रहे एक ट्रक का पहिया निकल गया। इसके बाद ट्रक बेकाबू होकर कार पर पलट गया।

क्रेन से कार को ट्रक से अलग करवाया

कार सवार में से तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि 8 साल की एक मासूम बच्ची बाल-बाल बच गई है। मृतकों की शिनाख्त की जा रही है। मौजूद लोगों ने बताया कि हादसे का शिकार हुए लोग कार के अंदर फंस गए थे। सूचना पर पहुंची पुलिस ने क्रेन और जेसीबी की मदद से कार को ट्रक से अलग करवाया और उसमे फंसे लोगों को बाहर निकाला। मृतकों के बारे में और जानकारी जुटाने का प्रयास पुलिस कर रही है।

भोपाल सांसद ने चेताया- एक भी पेड़ काटा तो खैर नहीं

आलोक शर्मा बोले- पेड़ काटकर डेवलपमेंट नहीं करने देंगे, ऐसे प्रस्ताव पास नहीं करेंगे

भोपाल (नप्र)। भोपाल के तुलसीनगर और शिवाजी नगर में 29 हजार पेड़ काटकर मंत्री-विधायकों के बंगले बनाने की योजना थी। जिसे आमजनों के विरोध के बाद भले ही कैंसिल कर दिया गया हो, लेकिन सांसद आलोक शर्मा ने इसी मुद्दे पर अफसरों को चेताया है। शनिवार को उन्होंने कहा कि पेड़ काटकर डेवलपमेंट नहीं होने देंगे। ऐसे प्रस्ताव पास नहीं करेंगे। एक पेड़ भी काटा तो खैर नहीं होगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर एक पेड़ मां के नाम कैंपेन के तहत भोपाल सांसद शर्मा भी अपनी मां विद्या शर्मा के साथ ईदगाह हिल्स स्थित कैंसर हॉस्पिटल ग्राउंड में पौधारोपण किया। भारतीय नागरिकता मिलने वाली छात्रा संजना मेलवानी ने भी अपने परिवार के साथ पौधे रोपे। इस दौरान सभी वर्ग के लोग मौजूद थे। सांसद ने ग्रीन भोपाल क्लीन भोपाल का संकल्प भी दिलाया।

अफसरों को सद्बुद्धि के लिए पौधा भेंट करुंगा

कार्यक्रम में सांसद शर्मा ने कहा कि बिना जनप्रतिनिधियों को भरोसे में लिए भोपाल में एक भी पेड़ काटा तो खैर नहीं होगी। अब भोपाल का बेटा आपके साथ है। बिना जनप्रतिनिधियों को कॉन्फिडेंस में लिए कोई कार्य योजना बनी तो ऐसे अफसरों की खैर नहीं। यह मेरी समझाइश भी है, चेतावनी भी है। जिन अफसरों ने 29 हजार पेड़ काटने का प्रस्ताव बनाया था, उन्हें सद्बुद्धि देने के लिए में उन्हे पौधा भेंट करुंगा। ताकि, भविष्य में ऐसी नुकसानदायक योजना न बनाए। जिससे सरकार की छवि खराब हो।

पेड़ों को काटे जाने के प्रस्ताव के विरोध में तुलसी नगर और शिवाजी नगर में बड़ा विरोध प्रदर्शन हुआ था। इसके बाद सरकार ने योजना कैंसिल कर दी थी।

पेड़ काटने का यह था मामला

भोपाल के तुलसी नगर और शिवाजी नगर में हजारों पेड़ काटे जाने का मामला इस महीने सुर्खियों में रहा है। इस मुद्दे पर कांग्रेस भी मैदान में उतर गई थी। वहीं, आम लोगों ने पेड़ों से चिपककर आंदोलन किया था। इस जगह पर मंत्री-विधायकों और अफसरों के बंगले बनाने की योजना सरकार की है।

विरोध प्रदर्शन के बाद 12 जून को नगरीय प्रशासन एवं आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने इस योजना को कैंसिल कर दिया था। उन्होंने सोशल मीडिया ङ्घ पर इसकी जानकारी दी थी। लिखा था कि नए भोपाल के पुनर्घनत्वीकरण योजना के पर्यावरण संरक्षण एवं क्षेत्र में मौजूदा वृक्षों को देखते हुए प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया है। साथ ही अन्य वैकल्पिक स्थानों के परीक्षण के निर्देश दिए गए हैं।इसके बाद हाउसिंग बोर्ड ने भी प्रस्ताव को निरस्त करने के आदेश जारी कर दिए थे।

पचमढ़ी में बंदर ने टूरिस्ट को काटा, नसें डैमेज हुईं

पैर की चमड़ी काटकर लगाना पड़ी; 1 महीने में 60 से ज्यादा लोग घायल

नर्मदापुरम (नप्र)। पचमढ़ी में टूरिस्ट्स पर बंदरों के अटैक के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। एक महीने में 60 से ज्यादा टूरिस्ट्स बंदरों के काटने पर अस्पताल पहुंच चुके हैं। जबलपुर की एक युवती को तो हाथ में इतना गहरा काटा कि डॉक्टरों को पैर की चमड़ी काटकर हाथ पर लगाना पड़ी। युवती को शुक्रवार को अस्पताल से छुट्?टी दी गई।

शुक्रवार को ही पचमढ़ी के बाजार में टूरिस्ट की गाड़ी से बंदर 1 लाख रुपए से भरा बैग ले भागा। महाराष्ट्र से आए टूरिस्ट और लोकल लोग उसके पीछे दौड़े। बंदर ने मकान की छत पर 500-500 के नोट बिखेर दिए। बाद में लोगों ने नोट और बैग उठाकर टूरिस्ट को लौटाए।

युवती की नसें डैमेज हो गई थीं, ऑपरेशन में 1.25 लाख रु. खर्च

जबलपुर की दीपा चौधरी एक हफ्ते पहले पचमढ़ी घूमने पहुंची थी। हांडी एरिया में उनको बंदर ने हाथ में काट लिया, जिससे नसें डैमेज हो गईं। शुरुआती इलाज पचमढ़ी में हुआ। दूसरे दिन जबलपुर के मेट्रो हॉस्पिटल में एडमिट हुईं। उनके हाथ की सर्जरी की गई है।

डेढ़ घंटे चले ऑपरेशन के बाद कटी हुई जगह पर नसों को जोड़ा गया। पैर की चमड़ी निकाल कर कटी हुई जगह पर लगाई गई। दीपा का कहना है कि ऑपरेशन और अस्पताल को मिलाकर अब तक 1.25 लाख रुपए खर्च हो चुके हैं। हाथ पूरी तरह ठीक होने में महीनों लगेंगे।

लाल मुंह के बंदर के काटने पर वन विभाग मुआवजा नहीं देता

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व (एसटीआर) के फील्ड डायरेक्टर एल कृष्णमूर्ति का कहना है कि लाल मुंह के बंदर को वाइल्ड लाइफ प्रोटेक्शन एक्ट से अलग कर दिया गया है। लाल मुंह का बंदर काटता है या हमला करता है तो अब पीड़ित का इलाज फॉरेस्ट विभाग की ओर से नहीं कराया जाता है। वाइल्ड लाइफ प्रोटेक्शन एक्ट में संशोधन के पहले हम इलाज और मदद राशि देते थे। अब कलेक्टर के जरिए से दी जाएगी।

चाकूबाजी के चश्मदीद 2 बच्चों को मारकर तालाब में फेंका

हमले में घायल का बदमाशों पर आरोप; पुलिस बोली- नहाते समय डूबे

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में दो बदमाशों ने मजदूर को घेरकर उसकी पीठ पर ताबड़तोड़ चाकू मारे। घटना देवरी गांव में शुक्रवार रात 11 बजे की है। मजदूर का आरोप है कि दो बच्चों ने घटना देख ली, इस वजह से बदमाशों ने उनकी हत्या कर शव तालाब में फेंक दिए।

घायल मजदूर को रात में जबलपुर मेडिकल कॉलेज लाया गया। रात में ही दोनों बच्चों को भी मेडिकल कॉलेज लाया गया। उन्हें डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। तिलवारा थाने की पुलिस का कहना है कि मजदूर के बयान सही नहीं हैं। बच्चे नहाते समय तालाब में डूबे हैं।

पुराने विवाद में घेरकर चाकू से हमला- देवरी गांव में रहने वाले टावल सिंह ने बताया कि वह गुटखा लेने दुकान जा रहा था। गांव के ही नीरज राय और आकाश पटेल ने रोका और पुराने विवाद में गाली-गलौज करने लगे। इतने में आकश ने हाथ पकड़ लिए, नीरज ने चाकू से पीठ पर वार किए।

प्रतीक सिंह ठाकुर (11) और आसमान भूमिया (10) ने देख लिया तो बदमाश बोले कि इन्हें भी मारेंगे। उन्हें तालाब में फेंक दिया। टावल की पत्नी पुष्पा बाई ने बताया कि प्रतीक उनके रिश्तेदार का बेटा था। पुष्पा का कहना है कि दोनों बदमाशों ने पहले भी पति पर हमला किया था। इसकी शिकायत तिलवारा थाने में की थी।

उमा बोलीं-हर रामभक्त भाजपा को वोट देगा, अहंकार न पालें

शिवपुरी में कहा- जरूरी नहीं, जिसने वोट नहीं दिया वह रामभक्त नहीं

शिवपुरी (नप्र)। पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती ने कहा, जरूरी नहीं जो भाजपा को वोट नहीं दे, वह रामभक्त नहीं। हर रामभक्त भाजपा को वोट देगा, ऐसा अहंकार हमें नहीं पालना चाहिए।

उमा भारती शनिवार को ग्वालियर से भोपाल जाने के दौरान शिवपुरी में भाजपा नेताओं से मिलीं। इस दौरान उन्होंने मीडिया से भी चर्चा की। उमा ने यूपी में लोकसभा में भाजपा को मिलीं कम सीटों पर चिंता जाहिर की। बोलीं- यूपी में निश्चित रूप से सीटें कम हुई हैं। यहां सामाजिक व्यवस्था अलग है। भाजपा समीक्षा करेगी। मैं भी अपना मत दूंगी।

हिंदू समाज धर्म व्यवस्था को एक नहीं करता- उमा भारती ने कहा, पहले हिंदू समाज का मन समझना होगा। हिंदू समाज, समाज व्यवस्था और धर्म व्यवस्था को एक नहीं करता है। उधर, इस्लामिक समाज है जो समाज व्यवस्था और धर्म व्यवस्था को एक करके चलता है। उसी हिसाब से अपना वोट देता है। लेकिन हिंदू समाज सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप वोट देता है। हालांकि ऐसा बिल्कुल नहीं है कि हिंदुओं की रामभक्ति कम हो गई है। वे रामभक्त तो हैं, लेकिन किसी कारणवश वोट भाजपा को नहीं देना चाहते हैं।

अयोध्या में ढांचा गिराने के बाद भी हार गई थी भाजपा- उमा भारती ने कहा, उत्तर प्रदेश में लोकसभा के चुनावी परिणामों पर मोदी-योगी को ब्लेम करना ठीक नहीं है। 6 दिसंबर को बाबरी मस्जिद का ढांचा गिराने के बाद भी भाजपा हार गई थी। इसके बावजूद हमने अयोध्या में राम लला के मंदिर को अपने एजेंडे से बाहर नहीं किया था। हमारे हर चुनाव में अयोध्या रही थी। हमने कभी अयोध्या को वोट से नहीं जोड़ा, इसी तरह अब हम मथुरा-काशी को भी वोट से नहीं जोड़ रहे हैं। मथुरा-काशी हमारे हृदय से जुड़े हैं।

400 पार पर बोलीं - जरूरी नहीं कि भगवान हर इच्छा पूरी करे- लोकसभा चुनाव में 400 सीट नहीं मिलने पर पूर्व सीएम ने कहा, उनकी इच्छा 500 पार की थी, लेकिन भगवान हर इच्छा पूरी नहीं करते हैं। इस चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने आप को प्रधान सेवक कहा था। हम सबने अपने आप को मोदी का परिवार कहा था। इसके बावजूद मंशा अनुरूप सीटें नहीं आईं, इसकी समीक्षा भाजपा करेगी। क्योंकि मैं समीक्षा करने वाली टीम में शामिल नहीं हूं। 400 की जगह 240 सीटें आने का कारण राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रसाद नड्डा ही बता पाएंगे।पूर्व सीएम के शिवपुरी से गुजरने की सूचना मिलने पर बड़ी संख्या में कार्यकर्ता सड़क किनारे स्वागत के लिए खड़े हो गए।

केंद्र में सरकार चलाने में नहीं आएगी कोई परेशानी

केंद्र में बिहार के सीएम नीतीश यादव और आंध्र के सीएम चंद्रबाबू नायडू के सहयोग से बनी सरकार पर पूर्व सीएम उमा भारती ने कहा कि केंद्र में सरकार चलाने में कोई परेशानी नहीं आने वाली है। नीतीश कुमार पहले से हमारे साथ रहे हैं और चंद्रबाबू नायडू पिछले समय में भी हमारे साथी थे। वह अटल जी के समय से हमारे साथ रहे हैं। यह कोई विजातीय तत्व नहीं है। उन्होंने पहले भी साथ काम किया है, अब भी कर रहे हैं।

एमपी में मोहन सरकार ने रचा इतिहास

एमपी में लोकसभा चुनाव में भाजपा को 29 सीटें मिलने पर पूर्व सीएम ने कहा, जब से मध्यप्रदेश बना है, तब से पहली बार हुआ है कि मोहन सरकार में भाजपा ने 29 में से 29 सीटें जीती हैं। इससे पहले जब वह सीएम थीं, तब सबसे ज्यादा 29 में से 25 सीटें जीती थीं। जीत का आंकड़ा बढ़ता ही गया और इस बार मोहन यादव प्रगति की ओर ले गए। इस बार 29 में से 29 सीटें भाजपा ने जीती हैं।

पुण्य पथ

लघुकथा

ब्रजेश कानूनगो

कुसुम को एक तरह से मन में खुशी भी थी और थोड़ा दुख भी हो रहा था कि बेटे बहू को विदेश गए अभी छह माह भी नहीं हुए थे और वापिस लौटना पड़ा था।

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी के आने से थोड़ा पहले ही प्रभात का विवाह बहुत धूमधाम से किया था कुसुम ने। तनिष्का जैसी सुंदर और गुणवान बहू को पाकर जैसे ढेर सारी खुशियां परिवार को मिल गई थीं।

बहू के शुभ पांव घर में पड़े तो बेटे को भी नौकरी में तरक्की मिल गई। दुख इस बात का था कि कम्पनी ने नई नियुक्ति सात समंदर पार विदेश में कर दी थी।

शादी को एक माह भी नहीं बीता होगा कि नव विवाहित बेटे बहू को परदेस जाना पड़ा। तनिष्का के साथ रहने की कुसुम की सारी इच्छाएं मन में ही दब कर रह गईं। जैसे तैसे भारी मन से बेटे बहू को विदा किया था उसने।

महीने भर में ही अचानक दुनिया भर में फैल गई संक्रामक महामारी ने जैसे सब कुछ बदल कर रख दिया था। सब लोग घरों में कैद हो गए थे। देश हो या परदेश सभी जगह एक सी स्थिति, एक सा भय का वातावरण। प्रभात और तनिष्का भारत में अकेली रह गई माँ कुसुम की चिंता में परेशान हो गए। एयर लाइंस भी सब बन्द हो गईं थीं।

कंपनी ने वर्क फ्रॉम होम की सुविधाएं अपने कर्मचारियों को उपलब्ध करा दीं। इस बीच सरकार ने राहत अभियान के तहत विशेष विमान सेवाएं शुरू कीं तो प्रभात और तनिष्का को भी इसका लाभ मिल गया। वे लोग भारत लौट कर घर से ही अब कंपनी का काम कर रहे थे। हालांकि प्रभात ज्यादातर कामकाज रात को ऑनलाइन ही करता। दिन में आराम करता।

तनिष्का ने भी घर का काम संभाल लिया। काम वाली बाइयों को अभी भी काम के लिए बुलाना शुरू नहीं किया गया था। सब काम कुसुम और तनिष्का मिल जुल कर कर लेतीं थीं।

भारतीय संस्कारों वाली कुसुम ने तनिष्का

को कह रखा था कि वह एक रोटी कुत्ते और गाय को देने के लिए भी अतिरिक्त बनाया करे। उनका घर नए विकसित बायपास के पास बनी कॉलोनी में होने से ग्रामीण परिवेश और भारतीय संस्कारों से अब भी जुड़ा हुआ था। बहू तनिष्का दो रोटियां ज्यादा बनाकर नियमित रूप से चौकीदार के कुत्ते शेरू को और दूध वाले भैया की गाय को खिला आती।

कुछ दिनों से कुसुम महसूस करने लगी थी कि तनिष्का अब जरूरत से कुछ ज्यादा ही संख्या में रोटियां बनाने लगी है और गाय कुत्ते के लिए ले जाने लगी है। सास तो आखिर सास ही होती है। तनिष्का द्वारा किया जा रहा यह अपव्यय थोड़ा बर्दास्त से अधिक हो गया उसके लिए। पुण्य कमाने की भी एक सीमा होती है।

आखिर एक दिन कुसुम ने तनिष्का को टोक ही दिया- ये इतनी सारी रोटियाँ क्यों ले जाती हो? एक दो ही ठीक हैं!

लेकिन जो उत्तर तनिष्का ने दिया वह बहुत चौंकाने वाला था। तनिष्का ने बताया कि वह जो अतिरिक्त भोजन बनाकर ले जाती है उसे वह एक ऐसे युवक को देकर आती है जिसकी नौकरी कोरोना काल में आई मंदी की वजह से चली गई है। परेशानी में वह अर्धविक्षिप्त सा हो गया है और मंदिर के ओटले पर बरगद की छांव में बेसुध सा दिनभर पड़ा रहता है।

उसने आगे कहा- मम्मी जी मैं ठीक कर रही हूँ न! हम तो फिर भी बेहतर हैं जो हमें बहुराष्ट्रीय कम्पनी ने घर से काम करने को कह दिया। सोचकर ही डर लगता है उन छोटे कारोबारियों और उन लोगों के बारे में जिनकी नौकरी चली गई,धंधा चौपट हो गया है। बुरा वक्त कब किसका आ जाए कोई नहीं जानता, शायद इसीलिए तो पुण्य कमाने हेतु गौ माता और श्वान को हम प्रतिदिन भोजन देते हैं।

(लघुकथा)

पांच का सिक्का

सुरेश सौरभ

ट्रेन स्टेशन पर आ गई। वह लाइन में लगी थी। किसी तरह विन्डो पर पहुँच गई, पर टिकट नहीं मिला। वह पसोपेश में थी । अनायास ही पूछा-क्या दिक्कत है।

छुट्टा पांच का नहीं? वह खातून सकुचाते हुए बोली। 'लो।' पांच का सिक्का उसकी ओर बढ़ाते हुए बोला।

ट्रेन एक सीटी दे चुकी थी। 'देखिए मैंने अपना टिकट ले लिया है। ले लीजिए वर्ना ट्रेन छूट जायेगी।

बुर्के से झांकती आंखों से वह बोली-%फिर आप को कैसे वापस करूंगी।

अपने जैसे ऐसे ही किसी जरूरत मंद को मेरे पाँच वापस कर देना। बस मेरा अदा हो जायेगा।

पांच का सिक्का चला। विन्डो पर पहुंचा। अब वह संभ्रान्त खातून ट्रेन पर चढ़ चुकी थी।

(लघुकथा)

इच्छाओं का साम्राज्य

विवेक कुमार मिश्र

आदमी आदमी की तरह
जब नहीं रह पाता
तो बिना मरे , मर जाता है
मरे हुए आदमी घूमते रहते हैं
यहां से वहां तक पसरे हुए हैं
मरे मरे आदमी , आदमी नुमा आदमी
ठीक है , माना कि आदमी मर जाता है
एक समय के बाद
आदमी मर ही जाता है
मरते हुए आदमी से
मिलते हुए बराबर लगता है कि
इच्छाएं कभी नहीं मरती
हां ! इच्छाएं बिल्कुल नहीं मरती
इच्छाएं अनंत जन्मों तक चलती रहती हैं
इच्छाएं मरती ही नहीं
भले आदमी मर जाता हो
मरे हुए आदमी भी
जी जाते हैं
इच्छाओं के साम्राज्य में
एक आदमी अनंत जन्मों तक
इच्छा के रूप में
चलता ही रहता है
इच्छाओं के रूप में
आदमी घूमता रहता है
इच्छाओं के पुतले
समय-असमय मिलते ही रहते हैं
यहां से वहां तक कुछ नहीं
बस, इच्छाओं का ही साम्राज्य है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कितना प्रभावी सोशल मीडिया का झुनझुना

वक्रोक्ति

अनुपम अनुश्री

लेखिका व्यंग्यकार है।

चारों तरफ छाया हुआ है सोशल मीडिया। सोशल मीडिया के काल में या फिर इसके जंजाल में

हर कोई व्यस्त है, मस्त है और सोशल मीडिया के परिवार में चार चाँद लगा रहा है।

इतनी सक्रियता जिंदगी में नहीं होगी, जितनी सक्रियता सोशल मीडिया पर है!

छोटी उम्र के बच्चों से लेकर बड़ी उम्र के बूढ़ों तक सब सोशल मीडिया पर चहल कदमी कर रहे हैं।

सुबह सोशल मीडिया से ,रात सोशल मीडिया से।

सारे जमाने की खबरें,प्रपंच की सारी बारात सोशल मीडिया पर चलती है। हर कोई यहाँ नायक /नायिका हैं । अपनी छोटी सी बात से लेकर बड़ी बातों का पूरा प्रचार- प्रसार तंत्र फैलाया हुआ है। जुकरबर्ग ने जगह दी है तो उस जगह का भरपूर इस्तेमाल हो रहा है। एक मामूली सी बात को फैला- फैला कर विशालकाय बनाने का पूरा यत्न /प्रयत्न हो रहा है।

बंदर के हाथ में जैसे उस्तरा आ गया ! हर कोई अपने आप को तीरंदाज समझ रहा है और नए-नए तीर निकाल-निकाल कर यहाँ पेश कर रहा है। मामूली सी बातों की इतनी बड़ी-बड़ी कहानी ! आखिर जगह मिली है तो अपने दिमाग की सारी कलाबाजियाँ वहां दिखा दी जाएँ, भले ही फिर लोग लानत-मलामत भेजें! छोटे-छोटे बच्चे इतने एक्सपर्ट एक्टर्स हो चुके हैं। रील बना - बनाकर एक्टिंग कर रहे हैं बड़ों - बड़ों की ! पढ़ाई- बढ़ाई एक तरफ, रील का पैशन- इमोशन एक तरफ। इनफ्लुएंसर तमाम हथकंडे अपना रहे हैं और अशुद्ध लिख -लिख कर, उल्टा सीधा कंटेंट परोस कर , कचरा -कूड़ा बिखेर कर दिमाग में सभी के भर-भर लाइक-कमेंट्स पा रहे हैं। आखिर इन्हें कोई प्रशिक्षण तो मिला नहीं है और न ही कुछ उत्कृष्ट पठन-पाठन या लर्निंग है।

टीनएजर्स अपनी बुद्धि ताक पर रखकर रील पर रील देखे जा रहे हैं। अपना समय / ऊर्जा जाने क्या सीखने में व्यर्थ कर रहे हैं! आखिर स्तरहीनता की पराकाष्ठा देखना हो तो यहाँ देखी जा सकती है आजकल।

सर चढ़कर बोल रहा है यह बुखार। हर कोई सोशल मीडिया का बीमार बना हुआ है। कोई विवेक, तर्क ,बुद्धि यहाँ काम नहीं कर रही सब एक ही धारा में बहे जा रहे हैं। गर्द उड़ रही है और सबको लपेटे ले रही है।

सोशल मीडिया के प्रभाव को और प्रभावी बनाने के लिए बहुत सारे स्क्रीन हीरोज यहाँ उत्पन्न हो चुके हैं ।कई सारे

इन्फ्लुएंस है। किस तरह छोटी सी बात को यानी तिल के ताड़ को पहाड़ बनाना है ,इसकी ट्रेनिंग ली जा रही है, दी जा रही है।

सोशल मीडिया कितना प्रभावी है !हकीकत में उसकी कहानी क्या है

यह तो पर्दे के पीछे वाला ही जाने लेकिन प्रपंच और बातों के , दिखावे के परचम लहरा लहरा कर फेक हीरोज बहुत इतरा रहे हैं। जो कमअक्ल हैं,नादान वय में हैं ,अवयस्क है छोटे हैं, मासूम है ,उनको बरगला रहे हैं।

ऐसे-ऐसे श्रेष्ठ विचारों का चौतरफा हमला हो रहा है अच्छे-अच्छे का बेड़ा गर्क को जाए , फिसल जाए, गिर जाए ,भटक जाए ,कुचक्रों में फँस जाए।

बुनियादी रूप से हिले हुए, आधारहीन लोगों के द्वारा यह जो तंत्र बिछाया गया है उसमें कौन न हिल जाए ! सब हिले हुए हैं ! सब की धरातल खिसकी हुई है। सब आसमान में टँगे हुए। समझ ही नहीं आता कि किसे देखें, किसे न देखें । किसे सुने ,किसे न सुनें !क्या पढ़े ,क्या न पढ़ें।

आँखों पर तो जैसे सोशल मीडिया का एक लुभावना चश्मा चढ़ा हुआ है। उसमें हर तस्वीर रंगीन नज़र आ रही है और मासूम नादान वय के बच्चों, टीनएजर बच्चों का तो बहुत ही अधिक हाल -बेहाल है।

एंड्रॉयड फोन का ही सवाल है । एंड्रॉयड फोन की इन्हें जरूरत ही क्या है ! इन्हें साधारण कॉलिंग वाले फोन से ही मतलब होना चाहिए। जब तक ब्रह्मचर्य है, स्कूल है, पढ़ाई है, खेलकूद है ,तब तक इन सब और बातों की क्या जरूरत है इतनी मशक्कत क्यों करना है अभी ! लेकिन इन्हें तो कम उम्र में ही सब कुछ जान लेने ,समझ लेने, देख लेने की आवश्यकता पड़ने लगी है!

नादान बच्चों को कौन समझाए कि इस फेक वर्ल्ड में अधिकतर पीतल या काँच है कोई सोना या हीरा नहीं।

कि उसके पीछे अपनी हीरे जैसी जिंदगी दाँव पर लगा दो। एंड्रॉयड फोन न मिले ,गेम खेलने को न मिले तो जान ही गंवा दो।

इस मुट्ठी में समा जाने वाले छोटे से यंत्र ने पता नहीं कितनों की जिंदगियों को निगल लिया है । आए दिन न्यूज़ चैनल समाचार पत्रों में नादान, मासूम, टीनएजर बच्चों की आत्महत्याओं की खबरें होती है। पता नहीं सरकार इस पर गौर क्यों नहीं फरमाती ! ! क्या बच्चों के शारीरिक/ मानसिक विकास/ नैतिक विकास के प्रति उसकी कोई जिम्मेदारी नहीं !

सोशल मीडिया की स्क्रीन प्रेजेंस कमल की है।

सारी दुनिया स्क्रीन पर ठहर गई है । हकीकत में जैसे कुछ रहा ही नहीं ! सच तो यह है कि जिन्होंने यह सब बनाया है उन्होंने अपने बच्चों को इससे दूर रखा हुआ है ।

विदेश में भी काफी घंटे तक मोबाइल से दूर रहने की कोशिश की जा रही है। अन्य गतिविधियों में जीने की कोशिश की जा रही है यानी सही मायनों में वर्चुअल स्क्रीन से बाहर निकल कर व्यावहारिक रूप में खुद को समझ कर, अपनों के साथ, अपनी हॉबीज के साथ,अपने कर्तव्यों के साथ, मित्रों के साथ जीने की कोशिश।

सच तो यह है कि उतना ही प्रभावशाली है सोशल मीडिया, जहाँ हकीकत में सत्य ,न्याय, सर्वहित में आवाज उठा समाज को दिशा दे रहा है । समाज की दशा में गुणोत्तर वृद्धि कर रहा है ,नहीं तो सिर्फ फेक व्यर्थ झुनझुना है जो भीड़ में बज रहा है । नौसिखिया नट की तरह नाच रहा है और लाइक- कॉमेंट्स के लिए ऊल जलूल हरकतें कर रहा है। इंटरनेट कोरू के खजाने की तरह है और सोशल मीडिया एडिक्शन, जहाँ पर अच्छा- बुरा सब कुछ पक रहा है और आकर्षक में बँधा हुआ आदमी बिना सोचे-समझे देखे जा रहा है।

यहाँ फेसबुकिया,कापी पेस्ट, कलमकार आत्म मुग्ध,छपास के शिकार है

अयोग्य होते हुए भी अपने आप को प्रचार - प्रसार तंत्र , येन-केन प्रकारेण सम्मान के जंत्र में खपाए दे रहे हैं साहित्यकार। यही बनावटी दिखावटी जंजाल सभी क्षेत्रों में सर्वत्र दिखाई पड़ता है और स्तरहीनता की, अकर्मण्यता की बाढ़ हुई है। मेरी बात फिर वहीं अटक जाती है कि मंच कोई भी हो उसका प्रयोग सार्थक हो, संयमित हो।

विश्वास

अविनाश अग्निहोत्री

अरे वाह,बारिश और प्याज,पालक के ये करारे करारे भजिए।जबकि अभी परसों ही तो मीठे चीले खाए थे।

सच शिखा खाने बनाने में तुम्हारा कोई मुकाबला नही। आज डायनिंग टेबल पर बैठा अनमोल अपनी पत्नी की पाक कला की खुले मन से तारीफ किए जा रहा था।

अब बस भी करो ये भजिए आपकी नही पापाजी की फरमाइश पर बने है।

हां तभी तो वो सबसे कहते घूमते हैं कि ईश्वर ने मुझे बहु के रूप में बेटी ही दी है जो मेरी हर जरूरत का ख्याल रखती है।

और तुम भी तो उनकी कही कोई बात नही टालती।

अनमोल ने मुस्कुराते हुए शिखा की चुटकी ली।तब शिखा बोली,मुझे परिवार के हर सदस्य को जीते जी सुखी व संतुष्ट रखना है।

तस्वीर के आगे भोग लगाने में मेरा कोई विश्वास नही इतना कहते शिखा का स्वर अब गंभीर हो चला था।

कविता-बारिश

हरिवंशराय बच्चन

आज मुझसे बोल, बादल
वर्षा समीर
यह पावस की सांझ रंगीली
यह पावस की सांझ रंगीली
आज घिरे हैं बादल,
साथी भीग रहा है भुवि का आँगन
यह पपीहे की रटन है
है पावस की रात अँधेरी
पपीहा

युवाओं के लिए सरकारी नौकरी की दुकान

व्यंग्य

दिनेश विजयवर्गीय

आज पता नहीं कहां से घूमता फिरता गुड़की बहुत दिनों बाद मॉर्निंग वाक में नजर आया। हम मिले बैठे बातें हुई यहां वहां की। अब राजनीति छोड़कर अन्य विषयों पर चर्चा होने लगी । मैंने पूछा तुम्हारी मोहब्बत की दुकान कैसी चल रही है ? वह बोला मोहब्बत की बातें तो लोगों में जमी नहीं। बहुत प्रयास किया मोहब्बत तो स्वार्थ से घिरी रहती थी , ऐसे में फायदा तो दूर की कौड़ी हो गया। बस जिधर देखो उधर घाटा ही घाटा। मैं चिंता में घिरता गया ।आखिर धंधा तो कुछ करना ही था ,तो इस मोहब्बत की दुकान को हटाकर एक नई युवाओं के हित वाली दुकान कल सुबह खोल रहा हूं ।आखिर मुझे भी तो घर गृहस्थी चलानी है।

मैंने गुड़की की व्यथा कथा सुन कहा तुमने समय पर अच्छा कदम उठाया । जिस धंधे में घाटा हो उसके बोझ को ढोने से क्या फायदा? तो अब किसकी दुकान खोल रहे हो ? वह उत्सुकता से बोला यह सब कल आप आंखों के देख लेना। आप कल सुबह दस बजे पधारिये । एक युवक द्वारा उद्घाटन होने जा रहा है।

मैं दूसरे दिन सुबह प्रसिद्ध बाजार के चौराहे पर पहुंचा ।दुकान के बाहर युवक युवतियों की भीड़ से दुकान पटी हुई थी । दुकान के बाहर बड़े-बड़े बैनर पोस्टर लगे हुए थे ।

जिनमें लिखा था। युवाओं को बिना किसी झंझट के सरकारी नौकरी। पहले आओ पहले पाओ ।परीक्षा से बिना डरे सफलता । हजारों लाखों रुपए का वेतन पाने के लिए अपना पांव हजार रुपए देकर रजिस्ट्रेशन करवायें । कम टैलेंट युवाओं के लिए भी नौकरी की गारंटी । उनके के लिए परीक्षा में डमी कैंडिडेट बिठाकर नौकरी पक्की करेंगे ।लाभार्थी युवाओं के लिए सहयोग राशि का विवरण। सरकारी शिक्षक के लिए पन्द्रह लाख पटवारी के लिए दस लाख पुलिस एस आई के लिए बीस लाख बाबू की की नौकरी के लिए दस लाख रुपए।आप निश्चिन्त रहें। आपको परीक्षा के लिए पेपर परीक्षा से चौबीस घंटे पहले उपलब्ध करा दिया जाएगा। किसी अगर मगर किंतु परंतु का भय दिल से निकाल दें। हमारा नीचे से ऊपर तक सब जगह सेटिंग है। हम तो बस आपके सुखद भविष्य के निर्माण के लिए जागरूक बने हुए हैं ।

मैंने गुड़की से कहा यह तो छल कपट बेईमानी की दुकान है। वह बोला समय के अनुसार जो ना चले वह भूका मरे । इसलिए मैंने समय की नब्ज़ को पहचान यह दुकान खोली है । आप कौन युवा है जो परीक्षा तैयारी करने में अपना जीवन बर्बाद करेगा ? जब बाजार में यह सहज सुलभ सुविधा उपलब्ध होने लगी है। जो हमारी इस सुविधा का लाभ नहीं उठाकर , परीक्षा देगा और पास न हुआ तो उसका जीवन अंधेरी गुफा की अग्रसर हो जायेगा । लेकिन हमारी इस दुकान के माध्यम से सुविधा में रहते उसे नौकरी की पक्की गारंटी। आज नौकरी पाना युवाओं के लिए बहुत उपयोगी है । उनकी शादी ब्याह सहज होने लगेंगे । जीवन भर ऐश करेंगे ।माता-पिता का बुढ़ापा वह अच्छे से काट सकेंगे। बस यही सब सोच कर इस दुकान का शुभारंभ किया है ।

लीजिए ,आप तो पोहा और गरम जलेबी का आनन्द लीजिए। इतना कह उसने जलेबी से मेरा मुंह मीठा करा वह दूसरे का मुंह मीठा कराने आगे बढ़ गया।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

कलाकार रीनी धूमल और धूमिल कलाकृतियों का द्वंद्व

कला अजीब सी बेचैनी को खुद में समाहित किए होती है तो बहुत अधिक उम्मीदों की दानदाता भी होती है। द्वंद्वों का उधेड़बुन है तो गहरे अंधेरे के बाद का स्पष्ट उजाला भी है। कला रंगों के, भावों के, रूपों के या ऐसे ही और भी कुछ विशेष का संगुंफन तैयार करता है। कला का सफर एक विशेष सफर होता है। कला आवश्यक है सभी के जीवन में।

रंगों और रेखाओं का हाथ थामें एक अनजान सफ़र पर निकल जाना कोई साधारण बात नहीं होती, खोना होता है नींद, सुकून, लड़ना होता है बिपरीत में उठ खड़े हुए हाथों से जो अपने ही होते हैं पर बर्ताव नहीं होता अपना सा, जहाँ कलाकार और दर्शक का भी विशेष संबंध होता है। जहाँ कल्पना को पंख जरूर लग जाते हैं। पंख ही लग गये थे रिनी धूमल के सपनों को जो उनके कृतियों में अक्सर नजर भी आते हैं, रीनी धूमल गहरी सोच को गहराई के साथ अंकन करने में दक्ष थीं। उनके कृतियों में बीज गमले से बाहर झांकते हैं पौधों के रूप में और वहाँ सवार होती है एक और कल्पना।

गहरे रंगों के गहराई में डूबने के साथ ही दर्शक एक ऐसे यात्रा पर निकलता है जहाँ अनंत के गुंजाइश के साथ ही संवाद की भी पूरी संभावना होती है। जहाँ दर्शक दर्शन के गंभीरता को गंभीरता से समझ सकने में पूरी तरह सक्षम होते हैं। रेखाएं भी एकदम ही रहस्यमई होती हैं धूमल के कृतियों में पर महत्वपूर्ण यह है कि उनके कृतियों में स्त्रीपक्ष के संघर्ष की गाथा है, सफलता है और उम्मीदों के पंख पर उड़ने को तैयार स्वप्न है जिसकी बदौलत ही कलाकार रीनी धूमल लगातार अपनी कला यात्रा पर रहीं।

1972 में बड़ौदा से कला शिक्षा प्राप्त तथा 84 में अध्यापन कार्य में लग जाने वाली कलाकार रिनी धूमल शुरु से ही बहुत शालीन, मृदुभाषी और कला के विद्यार्थियों हेतु संकटमोचक की भूमिका में रहीं हैं और अलग-अलग माध्यमों में कार्य भी करती रहीं हैं।

अध्यापन क्षेत्र में भी आप नित नये कारनामें करती रहीं। आपकी कृतियाँ आपके व्यक्तित्व को बखूबी बयाँ करती है। खुरदुरे पृष्ठभूमि से बारीक खड़ी पंक्तियों का झाँकना, नारंगी, भुरे तथा ऑकर यलो जैसे रंगों का सम्मोहनीय संयोजन, बिल्कुल एक ही स्ट्रोक में तैयार रेखांकन, टेढ़े-मेढ़े रेखाओं से तैयार बॉर्डर के बीच नये तरीके एवं शैली में तैयार मानवाकृतियाँ विशेषतः स्त्रियाँ उनमें भी नये रूप में देवी की पूरी श्रृंखला, जगह-जगह बेलबूटों के डिजाइन पूरे कृति को एकदम जीवंत बना देते हैं एकबारगी तो ऐसा लगता है जैसे बालुचरी साड़ियों पर तैयार की गयी हों कृतियाँ, पर ये महज भ्रम है। विषय हमारे आपके पास से

ही है पर वैसा नहीं है जैसा हम और आप देखते हैं, विशेषता ये कि हम और आप एकटक बस और बस कृतियाँ निहारते रह जाते हैं। बिना किसी भूमिका के, बिना किसी बंधन के न जाने कौन सी डोर है जो आपके कृतियों को देखने में दर्शक घंटों बिता देते हैं। फूल-पौधे, गमले, बर्तन, पशु-पक्षी, देवी के रूप में धारण किये हुए अस्त्र-शस्त्र, गुस्सा थोड़ा अलग तरीके के जानवर की सवारी सभी के संयोजन में गजब का सामंजस्य है। रंगों को थोड़ा और धूमिल मान लिया जाय तो कृतियां प्राचीन मटमैले कृतियों के ज्यादा नजदीक दिखाई पड़ती हैं पर अच्छी बात ये है कि हमारे आपके जैसा ना होकर भी हमारे आपके बीच से ही दिखती हैं। रिनी धूमल जी के कृतियों में माथे पर का चटख रंग किसी विशेष इच्छा को दर्शाता समझ में आता है। साधारण सी दिखने वाली कृतियों में सौन्दर्यबोध भरा पड़ा है। आंख होंठ नाक अधिकतर कृतियों में एक से हैं पर भाव पक्ष प्रबल है, मौन, क्रोध, के साथ ही आंखों में छिपे हजारों प्रश्न साफ-साफ देखे जा सकते हैं। 15 सितंबर 1948 को जन्मी रिनी धूमल पेंटिंग, प्रिंटमेकिंग के अलावा मिट्टी ,कांसे, ग्लासपेंटिंग जैसे विभिन्न माध्यमों में भी सक्रिय रही हैं, पेंटिंग में भी विविध माध्यमों जैसे कैनवास पर तैल रंग, सिरेमिक पर मिक्स मीडिया, पेपर पर जलरंग काली स्याही तथा चारकोल, पर आपने कार्य किया है। किसी विशेष सीमा में बंधकर ना तो आप रही हैं और ना ही आपकी कृतियां। चित्र 'द फ्लाइट' (पेपर पर जलरंग) में स्त्रियों की उड़ान, उम्मीद से भरी आंखें, उड़ने को आतुर पंख, पौधे से उत्पन्न स्त्री, संसार हेतु उम्मीद की द्योतक है पीले और नारंगी रंग आपके विशेषता के अनुरूप ही नजर आये हैं। आपके प्रमुख चित्रों में 'काली' तथा देवी जैसे कृतियों को गिना जा सकता है। स्त्री पात्र सामाजिक ताने-बाने से परे हर मुश्किल पल को आसानी से सम्हाल लेने को आतुर बैठी हैं, कहीं भी संशय एवं भय जैसी बात नहीं है, सभी को साथ लिये सत्ता सम्हाल लेने का दमखम भी है। आप के कृतियों में स्त्रियां गहरे भाव युक्त आंखों में दिखाई पड़ती हैं, बेवसी और व्याकुलता को सफलता में बदल लेने का हुनर भी है यहां पर। मुंबई, दिल्ली, हैदराबाद सहित स्पेन, जर्मनी, ताइवान, कैलिफोर्निया, मास्को आदि जगहों पर आपकी कृतियां प्रर्दशित हुई तथा ललित कला अकादमी, मानव संसाधन मंत्रालय, आइफेक्स जैसे संस्थानों से आपकी कृतियां पुरस्कृत भी हुई।

पग-पग पर बिखरे सौंदर्यछटा पर आप बहुत ही सुन्दर तरीके से अपनी बात रखती रहीं हैं पर दुर्भाग्य कि सौंदर्यमयी छटा पर अपनी बातें अपने तरीके से रखने के लिए अब आप हम सभी के बीच नहीं हैं, भविष्य में आपके और भी नये कृतियों को देख पाना अब महज सपना रह गया है। 8 सितंबर 2021 यही वो भयावह समय रहा जब भारतीय कला क्षेत्र के एक बहुत ही होनहार, प्रतिभाशाली कलाकार रिनी धूमल जी कला के इस यात्रा को त्याग कर दूसरे लोक के अनंत यात्रा पर निकल गई।

सामयिक

अमिताभ स.

रेडियो पर थम गई फ़िल्मी गानों और संगीत यंत्र की गूंज

हिंदी फ़िल्मों के गाने इस कदर बेशुमार हैं, इतने विविध मूडों के हैं, कि कोई अपनी हरेक बात और हर अहसास को बिना अपने शब्दों के किसी एक गीत की पंक्तियां गुनगुना कर बखूबी जाहिर कर सकता है। इस हुनर के लिए बस गीतों की अच्छी- खासी जानकारी होनी चाहिए। लेकिन ताज्जुब की बात है कि आज़ाद भारत में एक वक्त ऐसा भी था, जब हिंदी फ़िल्मों के गाने भारतीय रेडियो पर बजने- बजाने पर प्रतिबंध लगा था। 1952 में ऑल इंडिया रेडियो (अब आकाशवाणी) ने हिंदी फ़िल्मी गीत- संगीत पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया था। इसके पीछे तर्क दिया गया था कि फ़िल्मों में भारतीय संस्कार के अनुरूप शास्त्रीय संगीत की बजाय पश्चिमी ऑरकेस्ट्रा के तड़कीले- भड़कीले म्यूज़िक का इस्तेमाल बढ़ा है।

आजादी से पहले ऑल इंडिया रेडियो (अब आकाशवाणी) पर लोकप्रिय संगीत यंत्र हारमोनियम बजाने पर प्रतिबंध लगा, तो आज़ादी के बाद फ़िल्मी गानों पर भी। संगीत यंत्र पर रोक 40 साल चली और गीतों पर विविध भारती चैनल का प्रसारण चालू होने तक केवल 5 साल। ऐसा कब और क्यों हुआ ?

हिंदी फ़िल्मों के गाने इस कदर बेशुमार हैं, इतने विविध मूडों के हैं, कि कोई अपनी हरेक बात और हर अहसास को बिना अपने शब्दों के किसी एक गीत की पंक्तियां गुनगुना कर बखूबी जाहिर कर सकता है। इस हुनर के लिए बस गीतों की अच्छी- खासी जानकारी होनी चाहिए। लेकिन ताज्जुब की बात है कि आज़ाद भारत में एक वक्त ऐसा भी था, जब हिंदी फ़िल्मों के गाने भारतीय रेडियो पर बजने- बजाने पर प्रतिबंध लगा था। 1952 में ऑल इंडिया रेडियो (अब आकाशवाणी) ने हिंदी फ़िल्मी गीत- संगीत पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया था। इसके पीछे तर्क दिया गया था कि फ़िल्मों में भारतीय संस्कार के अनुरूप शास्त्रीय संगीत की बजाय पश्चिमी ऑरकेस्ट्रा के तड़कीले- भड़कीले म्यूज़िक का इस्तेमाल बढ़ा है।

दरअसल 1952 से 1962 के बीच डॉ. बी वी केसकर देश के केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री थे। उन्होंने श्रोताओं की गीत- संगीत और संस्कृति पर राय से जाना कि फ़िल्मी म्यूज़िक पूरी तरह से कॉकटेल है, नक़ल है और सड़कछाप है। इसे हिंदी और उर्दू का दूषित मेल ही नहीं बताया गया, बल्कि पश्चिमी देशों से कुप्रभावित और कमतर श्रेणी के नाचना- गाना करार दिया गया। मराठी ब्राह्मण परिवार के केंद्रीय मंत्री के मुताबिक़ देश की संगीतमय धड़कन एक वैचारिक पहलू होता है, जिसे उच्च संस्कृति और राष्ट्रीय संपदा के मापदंडों के अनुरूप गढ़ना ज़रूरी है। वह भारतीय संगीत और हिंदू संस्कृति विरासत के बनाने में दृढ़ता से आगे बढ़ना चाहते थे।

केन्द्रीय मंत्री डॉ केसकर को तो रेडियो पर हरमोनियम तक बजाना गंवारा नहीं था। क्योंकि यह यूरोपीय वाद्ययंत्र था, इसलिए ऑल इंडिया रेडियो पर आजादी से पहले ही हारमोनियम पर रोक लगा दी गई थी, जिसे उन्होंने भी अपने कार्यकाल में जारी रखा। इसी हारमोनियम की संगत के बगैर ग़ज़ल गायकी की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती, बल्कि इसी के सुर- ताल पर बेशुमार अमर धुनों की रचना हुई है। बता दें कि हारमोनियम का आविष्कार 17वीं सदी के शुरू में यूरोप के फ्रांस देश में अलेक्जेंड्रे डेबेन के हाथों हुआ था। उन्होंने 1840 में इसे पेटेंट कराया और नामकरण हारमोनियम किया। 19वीं सदी की शुरुआत में पश्चिमी सौदागरों के साथ यह हिंदुस्तान आ गया। तब यह काफी बड़ा था, इसमें पैर हिला कर हवा भरी जाती थी। फिर 1875 में बंगाल की एक म्यूजिक कंपनी के द्वारका नाथ घोष को इसे हाथ से हिला- हिला कर हवा भरने वाले वाद्ययंत्र के रूप में उतारने का श्रेय जाता है। दरअसल, आजादी से पहले 1939 के आसपास ही हारमोनियम के खिलाफ आवाज़ उठने लगी थी। हारमोनियम खासा लोकप्रिय था, लेकिन शास्त्रीय संगीत के घराने इसे अपनाने को तैयार नहीं थे। इसी बीच महात्मा गांधी के स्वदेशी आंदोलन के चलते भी विदेशी हारमोनियम के खिलाफ माहौल बनने लगा।

फिर जनवरी 1940 को रवींद्रनाथ टैगोर ने ऑल इंडिया रेडियो के कोलकाता केंद्र के निदेशक के नाम बाकायदा पत्र लिख कर जाहिर किया, मैं हमेशा संगीत में हारमोनियम की संगत के खिलाफ रहा हूं। इसे मैंने अपने आश्रम से हटा दिया है। अगर इसे ऑल इंडिया रेडियो के स्टूडियो में बैन करा दिया जाए, तो यह

भारतीय संगीत के हित में बड़ा कदम होगा।' ऑल इंडिया रेडियो के दिल्ली केंद्र पर वेस्टर्न म्यूजिक के निदेशक जॉन फॉल्ड्स और मुंबई केंद्र पर वॉल्टर कॉफमन ने भी हारमोनियम को भारतीय संगीत के लिए तब गैर-जरूरी माना था।

नतीजतन पहली मार्च, 1940 से ऑल इंडिया रेडियो के सभी केंद्रों पर हारमोनियम बजाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। रेडियो केंद्रों में रियाज़ तक के लिए हारमोनियम लाने पर रोक लग गई।

शुरू में बेशक बैन का समर्थन हुआ, लेकिन विरोधी भी कम नहीं थे। आज़ाद के बाद 1962- 63 में केंद्रीय सूचना प्रसारण मंत्री बी. जी. रेड्डी के कार्यकाल में हारमोनियम से प्रतिबंध हटाने की मांग तेज होने लगी। साल 1970 में प्रतिबंध हटाने के मसले पर सम्मेलन हुआ। इसमें संगीत की दुनिया के महारथी शरीक हुए। फौरी प्रयोगात्मक समाधान के तौर पर हारमोनियम का इस्तेमाल केवल टॉप ग्रेड कलाकारों के साथ संगत यंत्र के रूप में करने की छूट दी गई। हालांकि पूर्णतः प्रतिबंध हटाने की मांग अंततः 18 अप्रैल 1980 को पूरी हुई।

वापस फ़िल्मी गानों पर आएं, तो उस दौर में माना जाता था कि मधुर, सुरीले और अर्थपूर्ण गीत- संगीत सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप में चलाने में मददगार होता है। सरकार रेडियो को विज्ञापनों के बाज़ार में तब्दील करने के भी सख़्त ख़िलाफ़ थे। उसके ऐसे प्रयास काफ़ी हद तक संगीत जगत के पंडितों और उस्तादों के अस्तित्व को बचाने के लिए तब ज़रूरी और उचित भी थे। उस जमाने में, सारा भारतीय गीत- संगीत अपना रुतबा खोता जा रहा था। सरकार उनका संरक्षण करने की इच्छुक थी। सो, रोक अवधि के दौरान केवल रेडियो केंद्रों के स्टाफ कलाकारों के ही गीत- संगीत के कार्यक्रम प्रसारित होने लगे।

1950 के सालों का यह वही दौर था, जब राष्ट्रीय संगीत कार्यक्रम और रेडियो संगीत सम्मेलन जैसे लोकप्रिय कार्यक्रम प्रसारित होते थे। शास्त्रीय संगीत को आम जन तक पहुंचाने में इनका बड़ा योगदान रहा। और देखते ही देखते एम एस सुबुलक्ष्मी, अली अकबर खान, रवि शंकर, बिस्मिल्ला खान, पन्ना लाल घोष, कुमार गंधर्व, एस. बालाचंदर, भीमसेन जोशी जैसे दिग्गज कलाकारों की बेमिसाल प्रस्तुतियों से रेडियो गूंजने लगा था। इससे पहले 15 अगस्त 1947 की रात 8 से साढ़े 8 के बीच ऑल इंडिया रेडियो पर एम एस सुब्बुलक्ष्मी का स्वतंत्रता दिवस के जश्न में सुरीला मनोरंजक कार्यक्रम पेश हुआ था, न कि फ़िल्मी गानों का। लेकिन 1980 के बाद दूरदर्शन की बढ़ती लोकप्रियता के आगे ऐसे कार्यक्रम बौने होने लगे।

इसी बीच, पड़ोसी देश श्रीलंका ने भारतीयों की पसंद की नब्ज पर हाथ रख दिया। नतीजा हुआ कि रेडियो सीलोन में हिंदी फ़िल्मों के गाने बज उठे। इसी के चलते जाने- माने एंकर अमीन सायानी की मखमली आवाज़ में पेश बेहद लोकप्रिय कार्यक्रम बिनाका गीतमाला का आग़ाज़ रेडियो सीलोन के 41 मीटर्स चैनल पर हुआ। उधर सीलोन रेडियो पर हिंदी फ़िल्मी गानों की लोकप्रियता ने ऑल इंडिया रेडियो की बेचैनी बढ़ा दी। नतीजतन 1957 में ऑल इंडिया रेडियो फ़िल्मी गानों की ओर मुड़ने के लिए विवश हो गया। तभी रेडियो पर फ़िल्मी गानों से सजा अलग चैनल विविध भारती का प्रसारण प्रारम्भ हुआ, जो सारा का सारा ही फ़िल्मी गीत- संगीत पर आधारित था। दस साल बाद 1967 में इनके साथ विज्ञापन भी प्रसारित होने लगे। झुमरीतलइया जैसे कम सुने नाम वाले शहरों के श्रोताओं की फरमाइश के गाने भी गूंज उठे।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव में प्रबंध निदेशक है)

बेड कॉप में बीस साल बाद करण-अर्जुन लौटे

कहानी शुरू होती है, एक होटल से जहाँ अर्जुन (गुलशन देवैया) अपनी गर्लफ्रेंड कीकी (ऐश्वर्या सुष्मिता) के साथ एक आदमी को ठगता है, मगर वहाँ से भागते हुए वह एक मशहूर पत्रकार का खून होते हुए देखता है। उसे बचाने की कोशिश में अर्जुन अपना डीएनए वहां छोड़ देता है, जिससे शक की सुई उस पर ही आ जाती है। इसी के साथ गढ़ी गई है इंस्पेक्टर करण की भूमिका ,यह भूमिका भी गुलशन देवैया ने ही निभाई है, जिसमें वह थाने में अपनी बीवी देविका (हरलीन सेठी) के साथ बहस करते हुए दिखते हैं। देविका सिर्फ उसकी बीवी नहीं, बल?कि? उससे सीनियर पुलिस आफिसर भी है। इसे यूँ भी समझा जा सकता है कि सिरीज की कहानी अनाथालय में बड़े हुए जुड़वाँ हमशक्ल भाइयों करण अर्जुन की है जिनमें से करण पुलिसवाला बन जाता है, तो अर्जुन ठग। करण डॉन काज्बे के अवैध धन्धों का दुश्मन बना हुआ है, इसलिए काज्बे उसकी जान का दुश्मन है । एक मुठभेड़ में करण को गोली लगने से वो मर जाता है, वहीं उससे मिलने पहुँचा अर्जुन उसकी जिंदगी जीने लगता है। अब अर्जुन का मकसद करण के हत्यारों का पता लगाना है और कहानी रोचक बन जाती है।

इ बीस साल पहले पुनर्जन्म की कहानी को लेकर एक फिल्म आई थी - ' करण-अर्जुन ' ,इस फिल्म में करण, अर्जुन की भूमिकाएं निभाई थीं शाहरुख खान और सलमान खान ने । वो करण-अर्जुन की जोड़ी आज़ भी उतनी ही आइकॉनिक उतनी ही सुपरहिट है ।'इंडियाज गॉट टैलेंट ' और ' इंडियन आयडल ' जैसे विदेशी फॉर्मेट पर देसी रियलिटी शो बनाने वाली कम्पनी फ्रीमैंटल ने जब जर्मन वेबसिरीज़ 'बैड कॉप' का हिन्दी संस्करण बनाने का फैसला किया तो डिज्नी प्लस हॉटस्टार ने उसके लिये हामी भरी और उसी नाम से यह वेबसिरीज़ बनाई जो करण-अर्जुन को नये ढंग से परिभाषित करती है। ऐसा लगा जैसे बेड कॉप में बीस साल बाद करण-अर्जुन लौटें हैं ।

कहानी शुरू होती है, एक होटल से जहाँ अर्जुन (गुलशन देवैया) अपनी गर्लफ्रेंड कीकी (ऐश्वर्या सुष्मिता) के साथ एक आदमी को ठगता है, मगर वहाँ से भागते हुए वह एक मशहूर पत्रकार का खून होते हुए देखता है। उसे बचाने की कोशिश में अर्जुन अपना डीएनए वहां छोड़ देता है, जिससे शक की सुई उस पर ही आ जाती है। इसी के साथ गढ़ी गई है इंस्पेक्टर करण की भूमिका ,यह भूमिका भी गुलशन देवैया ने ही निभाई है, जिसमें वह थाने में अपनी बीवी देविका (हरलीन सेठी) के साथ बहस करते हुए दिखते हैं। देविका सिर्फ उसकी बीवी नहीं, बल?कि? उससे सीनियर पुलिस आफिसर भी है। इसे यूँ भी समझा जा सकता है कि सिरीज की कहानी अनाथालय में बड़े हुए जुड़वाँ हमशक्ल भाइयों करण अर्जुन की है जिनमें से

करण पुलिसवाला बन जाता है, तो अर्जुन ठग। करण डॉन काज्बे के अवैध धन्धों का दुश्मन बना हुआ है, इसलिए काज्बे उसकी जान का दुश्मन है । एक मुठभेड़ में करण को गोली लगने से वो मर जाता है, वहीं उससे मिलने पहुँचा अर्जुन उसकी जिंदगी जीने लगता है। अब अर्जुन का मकसद करण के हत्यारों का पता लगाना है और कहानी रोचक बन जाती है।

कमाडो तीनऔर क्रैक जैसी फिल्में बना चुके आदित्य दत्त ने इस वेबसिरीज़ में कुछ अच्छे एक्शन सीन रचे हैं। मुठभेड़ के दौरान करण-अर्जुन का पानी में गिरने वाला सीन, जिसमें एक का चेहरा और दूसरे की पीठ सामने होती है, आकर्षक है। उस पर आदित्य को गुलशन और अनुराग जैसे मँझे हुए कलाकार मिल गए हैं। गुलशन देवैया ने करण और अर्जुन दोनों भूमिकाओं में जान डाल दी है। अनुराग कश्यप तो अब परदे पर विलेन बनने में इतने एक्सपर्ट हो गए हैं कि उन्हें ज्यादा मेहनत करने की जरूरत नहीं पड़ती। हरलीन सेठी और ऐश्वर्या सुष्मिता ने भी अपनी भूमिकाएं ठीक से निभाई हैं । हालांकि, आम तौर पर बढ़िया अभिनय करने वाले सौरभ सचदेव इस वेबसिरीज मे उन्नीस पड़े हैं।

कमियों की बात करें, तो इस वैबसिरीज़ की सबसे कमजोर कड़ी इसकी पटकथा है। रेंसिल डिसिल्वा, श्रीनिता भौमिक, हुसैन दलाल और वेनिका मित्रा की चौकड़ी ने सीरीज में नब्बे वाले फिल्मी फॉर्मूला का हर नुस्खा आजमाया है। जुड़वाँ भाई, एक शरीफ-दूसरा बदमाश, एक की जगह दूसरे का प्लेसमेंट, ये सारे ही नुस्खे कई फिल्मों में पहले देखे जा चुके हैं। इसलिए, कहानी में नयापन नहीं लगता।आठ एपीसोड वाली इस सिरीज के अभी दो ही एपीसोड आए हैं जबकि बाकी एक-एक करके हर हफ्ते जारी किए जाएंगे, तो उम्मीद की जानी चाहिए कि आगे कहानी रोचक मोड़ लेगी।

आदित्य दत्त के लिए वेबसिरीज 'बैड कॉप' किसी जीवन चक्र के पूरे होने जैसी है।राजीव खण्डेलवाल के साथ जब आदित्य ने 'टेबल नंबर 21' बनाई थी तो उसे देखने के बाद भी अनुराग ने इसके बारे में ट्वीट करने से मना कर दिया था। अब बताते हैं कि वही अनुराग खुद आदित्य को फोन कर उनकी तारीफों के पुल बाँध रहे हैं। फ्रीमैंटल की प्रोडक्शन टीम की मानें तो पूरी सिरीज में अनुराग ने बहुत ही अच्छे कलाकार की तरह शूटिंग भी की है। जैसे न वह अपने कलाकारों को स्क्रिप्ट देते हैं, वैसे ही उन्होंने भी कभी अपने लिए यहाँ स्क्रिप्ट की माँग नहीं की। और, सीरीज के पहले तीन एपीसोड देखकर ये समझ आता है कि स्क्रिप्ट ही इस सिरीज की सबसे कमजोर कड़ी है। आदित्य को कभी यशराज फिल्म्स स्पाई यूनिवर्स की कोई फिल्म निर्देशित करने को मिली, तो उनका एक्शन कैनवस वाकई देखने लायक होगा।

समीपवर्ती ग्राम गोहानादेह माल में बीज महोत्सव कार्यक्रम संपन्न

सुबह सवेरे सोहागपुर

समीपवर्ती ग्राम गोहाना देह माल में आईजीएस के माध्यम से बीज महोत्सव कार्यक्रम आईजीएस प्रोजेक्ट प्रबधक हरिओम गोस्वामी,एफएक्स धीरज कुमार , एलएसपी गजेंद्र ठाकुर, सरपंच शिवानी जी आदि के आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर बीज महोत्सव में जंगल की विभिन्न जड़ी बूटियां, जंगली पेड़ो के बीज,भिन्न भिन्न प्रकार की भाजियां, कंद मूल फल, आदि बीजों की प्रदर्शनी लगाई गई । इस प्रदर्शनी का उद्देश्य विलुप्त या कम उपलब्ध होने वाली प्रजातियों के बीजों को प्रोत्साहन देना है । ताकि नई पीढ़ी को बीजों के आयुर्वेदिक उपयोगों से ज्ञान प्राप्त हो सके। मां नर्मदा नदी के तट क्षेत्र में प्रारंभिक वर्षाकाल में रोपित करने हेतु बीजों का संग्रहण करना उद्देश्य था। कार्यक्रम में सूखे बीज प्राप्त हुए हैं उनको नर्मदा नदी के तट क्षेत्र रिपोरियन जोन में लगाए जाएंगे । वहीं जड़ी भाजी मेनहर,

भंडारा,क्रशमाटी,रताडु, गठौरा, वैचाँद,काली एवं सफेद मूसली,जंगली लैसन, जंगली प्याज,इंगुआ, पंवार की भाजी, शकरकंद, तोन्दरी, इंडोरन, भष्मकन्द, ग्वारपाठा, अड़ंनाथ, कुल्लू की गाद, साले की गाद,किवलार की भाजी, फांग की भाजी, माट की भाजी, गठुआ, खुटला, पथरचता,रतनजोत, थूवड़, अर्जुन की छाल, मूंगा की छाल एवं वीज़, कनकटुआ की भाजी,क्रश माटी,रटाडू कन्द, चपत कन्द, वावुसिया, सेंमकन्द,रेनी ,खिन्नी, आदा झाड़ा,हर्रा, वहीदा, अर्जुन, अमरवेल,गुरवेल, रामकन्द,सेमकन्द, रामफल,आकउआ जामुन, नीम,रीठा,छीन्दा, कनज़ी, मेहदी, कनेर,दोपहरी, क्योच,केम, कोशम की छाल, खकरा का फूल, खुटला की भाजी करीबन 64 प्रकार के बीजों,भाजियों, कन्द,जड़ियों का संकलन किया गया। कार्यक्रम में शामिल नागरिकों एवं महिलाओं को उनके उपयोगों से अवगत कराया गया। इस अवसर पर करीबन सौ महिलाओं एवं 30 पुरूषों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम को राधा स्वसहायता समूह, एवं निर्मल विकास सेवा समिति ने भी सहयोग से किया था।

मानतुंग गिरी तीर्थ पर पौधारोपण

धार। दिगंबर जैन महिला महासमिति के तत्वाधान में जैन अतिशय तीर्थ क्षेत्र मानतुंग गिरी पर शुक्रवार को क्षुल्लीका श्री105 चंद्रमती माताजी के पावन सानिध्य में पौधारोपण किया गया । महासमिति अध्यक्ष उषा गंगवाल ने बताया कि 9 ग्रह और 12 राशि के पौधे अपनी अपनी राशि के अनुसार पौधारोपण किए गए कार्यक्रम की अध्यक्षता महिला महा समिति मध्यांचल की महामंत्री ममता गंगवाल ने की । इस अवसर पर समाज अध्यक्ष श्रेणीक गंगवाल, संजय छाबड़ा, महिला मंडल अध्यक्ष नेहा छाबड़ा, नरेश गंगवाल , किशोर जैन, मौसम झांझरी, वीरेंद्र बडजातया, अजय लुहाडिया , युवा संगठन के राकेश गंगवाल, पुनीत जैन व बड़ी संख्या में महिला महा समिति के सदस्यो की उपस्थिति रही। आभार सचिव ममता लुहाडिया ने माना ।

जमनजत्ती की पहाड़ी पर धार केमिस्ट एसोसिएशन द्वारा पौधारोपण किया

धार। धार नगर केमिस्ट एसोसिएशन द्वारा आज जिला प्रशासन एवं वन विभाग के सहयोग से जमनजत्ती की पहाड़ी पर जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जिला केमिस्ट एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष डॉ. अशोक शास्त्री , संरक्षक उमेश सोनी , उपाध्यक्ष अशोक अग्रवाल के आतिथ्य में पौधारोपण किया गाया । इस अवसर पर जिलाध्यक्ष डॉ. अशोक शास्त्री ने वृक्षों की अवैध कटाई के कारण बिगड़ते हालतों पर चिंता जताते हुए कहा की वृक्षों की

अवैध कटाई को कड़ाई से रोकने शासन को कठोर कदम उठाने के साथ फारेस्ट विभाग द्वारा उनकी नाक के नीचे मिलीं भगत से जो वनों की अवैध कटाई को कड़ाई से कठोर कदम उठाने की आवश्यकता हैं । साथ नगर की सभी जानता से भी आग्रह किया की इस वृहद् पौधारोपण में अपनी सहभागिता के साथ इनकी देखभाल की ज़िम्मेदारी भी निभाए । संरक्षक उमेश सोनी ने कहा की देश में इतनी गर्मी का मुख्य कारण वृक्षों की अवैध कटाई हैं , इसके प्रति हम सबको जागरूक होना पड़ेगा । उपाध्यक्ष अशोक अग्रवाल ने भी सभी से अधिक से अधिक पौधे लगाने की अपील की ।

नगर अध्यक्ष विनीत खत्री ने बताया की हमारे केमिस्टों द्वारा अपने परिवार वालों की स्मृति में कई पोधे लगाए हैं इनकी देखभाल भी हम ही करेंगे ।इस अवसर पर नगर सचिव पंकज जैन , आशीष वैद्य , अपूर्व जोशी , विनय जैन , राजेंद्र जैन , विशाल एरन , निलेश जैन , आरिफ खान , नितिन करमेलकर , नितिन शिवहरे , प्रवीण , प्रमोद पाटिल , शैलेंद्र मानवत , डॉ. मयंक तिवारी , कुशल सोनी , मनीष शर्मा , धर्मेंद्र पटीदार , संतोष चौधरी ,दिनेश चौधरी सहित बड़ी संख्या में केमिस्ट साथी उपस्थित थे । नगर सचिव पंकज जैन ने आभार व्यक्त किया । जानकारी पी. आर. ओ. निलेश जैन ने दी ।

रेत माफियाओं ने प्रवेश अग्रवाल को दी जान से मारने की धमकी, कोतवाली थाने मे दर्ज हुई रिपोर्ट

देवास। अवैध उत्खनन पर अंकुश लगाने हेतु सदैव तत्पर एवं सजग नर्मदे युवा सेना राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रवेश अग्रवाल को उनके और उनके परिवार को सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर जान से मारने की धमकी मिली है, गौरतलब है प्रवेश अग्रवाल ने देवास जिले में धड़ल्ले से चल रहें अवैध उत्खनन पर अंकुश लगाने के लिए प्रशासन को चेताया था जिसके पश्चात प्रशासन द्वारा सक्रियता दिखाते हुए खनन माफियाओं पर प्रशासन द्वारा ताबड़तोड़ कार्यवाही कर उनकी कमर तोड़ दी थी, जिसके पश्चात माफियाओं ने सोशल मीडिया पर प्रवेश अग्रवाल व उनके परिवार वालो को जान से मारने की धमकी दी।

जिसके बाद प्रवेश अग्रवाल ने देवास एसपी से मिलकर आवेदन के माध्यम से आरोपियों पर कार्यवाही करने की मांग की गई जिसके पश्चात देवास कोतवाली थाना में विभिन्न धाराओं में आरोपी के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई। ज्ञात रहे कि पूर्व में जान से मारने की धमकी एवं जानलेवा हमले उन पर हो चुके है।

कलेक्टर श्री गुप्ता ने तीन आरोपियों को किया जिलाबदर

देवास। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्री ऋषव गुप्ता ने मध्यप्रदेश राज्य सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत तीन आरोपियों को अपराधिक गतिविधियों में संलग्न होने पर जिला बदर किया है। जिसमें आरोपी भरतलाल उर्फ बबली पिता रामभरोस उम्र 34 साल निवासी दीपगांव थाना खातेगांव को एक वर्ष के लिए जिला बदर किया है तथा उदय उर्फ बिट्टू पिता महेन्द्र नागर उम्र 20 साल निवासी रणायल टोंकखुर्द और सीताराम पिता राधेश्याम उम्र 40 साल निवासी काटकुट थाना कन्नौद को छ-छ माह के लिए जिला बदर किया है। कलेक्टर श्री गुप्ता ने आदेश दिया है कि यह सभी आरोपी 24 घण्टे के भीतर जिला देवास एवं उसके आस पास के सीमावर्ती जिलों इन्दौर, उज्जैन, शाजापुर, सीहोर, हरदा, खण्डवा, खरगोन की राजस्व सीमाओं से बाहर चले जाए तथा जिला दंडाधिकारी न्यायालय की बिना पूर्व अनुज्ञा के प्रवेश नहीं कर सकेंगे।

सड़क पर बैठ आवाजाही प्रभावित करता है गौवंश...

नर्मदापुरम। ये तीन तस्वीरें नगरपालिका की कार्यप्रणाली की पोल खोलती है। नगरपालिका गर्व से कहती हैं उसने गौवंश और आवारा पशुओं को सड़क से हटाने के लिए हांका दल गठित कर रखा है। जो प्रतिदिन सड़क से गौवंश और आवारा पशुओं को हटाकर नगर के बाहर और गोशाला में छोड़ रहे हैं। पर ऐसा नजर नहीं आता, गौवंश सड़क पर ही विश्राम फरमाते हैं वह भी जिम्मेदार अधिकारी और नेता के निवास के

समीप.. हाईवे रोड़ शुरू हो जाने के कारण मालाखेड़ी तिराहा से लेकर आयुक्त कार्यालय तक सड़क पर आवाजाही का काफी दबाव बढ़ गया। आवाजाही वाले इस दबाव के मार्ग पर जबकि कलेक्टर, एसपी, कमीश्नर, एडीशनल, अनुविभागीय अधिकारी, वन संरक्षक, मुख्य न्यायाधीश कौन नहीं रहता..! पर सड़क के दबाव को कम करने, गौवंश विचरण और उनका सड़क पर बैठने का सिलसिला कम नहीं हुआ। सुबह साढ़े चार बजे की ये सभी तस्वीरें जबकि इस बात की गवाह है कि नगरपालिका का काम सही नहीं है यदि गौवंश गौशाला में बंद करते हैं तो कलेक्टर बंगले के सामने, राजस्व सभापति के निवास के सामने और वृद्धजन पार्क के सामने सड़क पर यूंही गोवंश की इतनी तादाद कैसे...?

घाटों के अस्तित्व को बचाए रखने के लिए प्रयास जरूरी...

नर्मदापुरम। होशंगाबाद अब नर्मदापुरम विशेष रूप से नर्मदा और नर्मदा के घाटों को लेकर प्रसिद्ध ही नहीं विश्व प्रसिद्ध की श्रेणी में आता है, लेकिन विश्व प्रसिद्ध श्रेणी के लायक यहां व्यवस्थाएं नहीं..? आने वाले दिनों हो सकता है नर्मदा पथ का निर्माण हो लेकिन नर्मदा के सुन्दर रहे घाटों की सुंदरता बनी रहे इसे लेकर कितनों को कितनी फ्रिक है..? यहां यह सोचने वाली बात है। दो तीन साल पहले घाट के नीचे खोह बताकर जिस प्रकार यहां की जनता को बेवकूफ बनाया है अब आज भी कह सुनकर लोग हंस लेते हैं। घाट के नीचे भले ही खोह नहीं हो इसे प्रशासन और जिम्मेदार बता नहीं सके लेकिन खोह भराई के नाम पर करोड़ों रुपए खर्च जरुर कर दिए.. अब विश्व प्रसिद्ध नर्मदा घाट को बचाने की मुहिम चलाई जानी जरूरी बन चुका है, क्योंकि आने वाली बाढ़ घाट को नुकसान पहुंचा सकती है। वैसे भी दो तीन बार की आई बाढ़ से नर्मदा घाटों के पत्थरों को अपनी जगह से हटा कर क्षतिग्रस्त तो कर दिया। जिन्हें बैठा पाने में सफल नहीं हो पाए हैं। विश्व प्रसिद्ध इन घाटों को बचाने के प्रयास करने होंगे जो अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए संघर्षरत है। उनमें एक तपस्वी घाट का भविष्य और उसके इतिहास का शिलालेख जैसा धूमिल होने की कगार पर समझ आता है। घाट को सजाने में हुई रंगाई-पुताई में उसका शिलालेख जैसे रंग में खो गया। नगर के बेहतर फोटोग्राफर हितेश थुडगर की पारखी नजर का कमाल हाल की फोटोग्राफी से समझा जा सकता है कि लगातार आने वाली बाढ़ घाट को क्षत्रि पहुंचा सकता है जिसमें घाट में लगे पत्थर अपने स्थान से सरक सकते हैं। प्रशासन और जिम्मेदारों को इस दिशा में घाट की सुरक्षा को लेकर पहल करनी चाहिए।

अपराधिक घटनाओं की रोकथाम एवं अपराधियों की धरपकड़ हेतु चलाया जा रहा विशेष अभियान

नरसिंहपुर। जिले अपराधिक घटनाओं की रोकथाम एवं अपराधियों की धरपकड हेतु चलाया जा रहा विशेष अभियान के तहत ऑटो चालकों के साथ बैठक आयोजित कर दिए आवश्यक निर्देश साथ ही दस्तावेज चैक कर जारी किए गए ऑटो नम्बर, विभिन्न स्थानों में चस्पा की गयी किराया सूची। जिला अंतर्गत अपराधिक घटनाओं की रोकथाम एवं अपराधियों की धरपकड हेतु पुलिस अधीक्षक श्री अमित कुमार के निर्देशन में जिला अंतर्गत विशेष अभियान चलाया जा रहा है। दस्तावेज चैक कर जारी किया गया ऑटो नम्बर, विभिन्न स्थानों में चस्पा की गयी किराया सूची नरसिंहपुर नगर में चलने वाले संपूर्ण ऑटो संचाकों को बुलाकर उनके दस्तावेज चैक किए गए एवं ऑटो के नम्बर जारी किए जाकर उनको रिकार्ड में दर्ज किया गया जो यातायात थाने में संधारित किया जावेगा। आमजनों को असुविधा का सामना न करना पड़े इस उद्देश्य से नगर में चलने वाले ऑटो की किराया सूची तैयार की जाकर नगर के विभिन्न स्थानों पर चस्पा की गयी है। ऑटो चालकों के साथ बैठक आयोजित कर दिए आवश्यक निर्देशजिले में चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत पुलिस अधीक्षक, श्री अमित कुमार के निर्देश पर थाना स्टेशनगंज क्षेत्र में ऑटो चालाकों के साथ बैठक आयोजित की गयी।

20 साल बाद भी सड़क वही आठ फुट की..!

नर्मदापुरम। सांसद और राज्यसभा सांसद के सम्मान समारोह में इस दफा यह बात खुल कर सामने आई कि नगर का विकास हुआ लेकिन बहुत धीमी गति से.. आज मुख्यालय पर विकास की बहुत जरुरी है वह भी प्राथमिकता वाले.. राज्यसभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया ने इस पर मोहर लगाते हुए स्पष्ट कर दिया कि अब सांसद निधि वाले विकास प्राथमिकता वाले और सलाह मशविरा के साथ किए जायेंगे। सांसद दर्शन

सिंह चौधरी ने इसे दोहराकर और मजबूती प्रदान की थी.. दोनों नेताओं का सम्मान हुए पन्द्रह दिन नहीं हुए कि पहली बारिश ने धीमें विकास की पोल खोल डाली पुलिस अधीक्षक के निवास से कलेक्ट्रेट गेट तक बनी 20 साल पहले आठ फुटी सड़क आज भी लोकनिर्माण विभाग उसे हर साल रिनोवेशन करते हुए नो फुट की नहीं कर पाया। जबकि हाइवे बन जाने से इस मार्ग पर आवाजाही पहले से ज्यादा बढ़ चुकी। 10 दिन पहले इस सड़क पर डामरीकरण का काम हुआ.. नतीजा सामने आया आठ फुटी सड़क के दोनों ओर पानी से बचाने के लिए लाल मुरम डाली गई, जिसे पानी ने दलदली बना दिया, और आज उस लाल मुरम से लोगों को बचाने के लिए काली जीरों चूरा डाला जा रहा। जबकि दोनों ओर के किनारे डब्ल्यू बीएम कर सड़क 20 की जा सकती थी 20 साल बाद भी आज हम उसी आठ फुट तक सीमित है जबकि रिनोवेशन पर लाखों रुपए जनता के टेक्स के पैसे यहां केवल उड़ाएं ही जा रहें हैं।

मन की बात का सीधा प्रसारण 30 जून को प्रत्येक बूथ पर दिखाया जाएगा

जिले में 6 जुलाई तक 51 हजार पौधे लगाने का लक्ष्य

धार। रविवार 30 जून को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मन की बात तथा एक पौधा माँ के नाम अभियान पर व्यापक चर्चा कर कार्यक्रम को सफल बनाने की कार्ययोजना बनाकर भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी के मार्गदर्शन में कार्यकर्ताओ को जवाबदारियां सौपी गई हैं।

भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने तीसरे कार्यकाल में पहली बार 30 जून को सुबह 11 बजे मन की बात के कार्यक्रम की शुरुआत करेंगे। जिससे कार्यकर्ताओ में जोश है। प्रधानमंत्री मोदी की मन की बात का यह 111 वां एपिसोड होगा। मोदीजी तीसरी बार सरकार बनाने के बाद पहली बार देश की जनता से सीधे जुड़कर संवाद करेंगे। जिले के सभी बूथों पर मन की बात के कार्यक्रम का सीधा प्रसारण को दिखाने व सुनने की व्यवस्था की जाएगी।

जिले में 51 हजार पौधे रोपने का लक्ष्य- एक पौधा माँ के नाम अभियान के तहत जिले भर में लगभग 51 हजार पौधे लगाने का लक्ष्य रखा है। जिसकी शुरुआत 30 जून को मन की बात कार्यक्रम के बाद

प्रत्येक बूथ पर बूथ समिति पौधों का रोपण करेगी तथा उन्हें सुरक्षित भी रखेगी उक्त अभियान जिलेभर में आगामी 6 जुलाई तक चलेगा।

जिला मुख्यालय पर होगा पौधारोपण- जिला अध्यक्ष मनोज़ सोमानी ने बताया कि 30 जून को सुबह 11 बजे प्रधानमंत्री मोदी की मन की बात कार्यक्रम के पश्चात जिला मुख्यालय पर नगर मंडल चिन्हित जगह पर पौधा रोपण का कार्यक्रम किया जाएगा।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि इस अभियान हेतु भाजपा नेता, जनप्रतिनिधि जिले के सभी मण्डल अध्यक्षो, सभी मोर्चा अध्यक्षो एवं जिला पदाधिकारियो को कार्यभार सौंपा गया हैं जो अपने चिन्हित स्थान पर पौधा रोपण अभियान में सहभागियता करेंगे।

ड्यूटी पर तैनात आरक्षक के साथ मारपीट करने वाले आरोपीगण को न्यायालय ने दी पांच वर्ष कारावास और अर्थदंड की सजा

देवास। प्रभारी उप संचालक/जिला जिला अभियोजन अधिकारी राजेन्द्र सिंह भदौरिया ने बताया कि थाना औद्योगिक क्षेत्र में दिनांक 2 नवंबर 21 को दोपहर औद्योगिक क्षेत्र के आरक्षक विकास पटेल अपने दोस्त पीयूष के साथ विकास नगर चौराहे पर खड़ा था। तभी एक मोटरसायकल बिना नंबर वाले ने कट मारा, तो आरक्षक विकास ने कहा कि देखकर चल तो आरोपी राहुल बोला कि वह उसे जानता नहीं है, वह कौन है, तेरे जैसे रोज आते हैं। इस पर आरक्षक विकास और उसका दोस्त पीयूष मोटरसायकल तक गया और बोला कि रूक तो वह मोटरसायकल तेज चलाता हुआ कैलादेवी मंदिर के अंदर मुड़ा और उज्जैन रोड पुल के पास पहुंचा, वहां पर उसके दो तीन साथी खड़े थे। फरियादी व उसके साथी ने रोका तो राहुल नाम के व्यक्ति जिसके पास हॉकी थी और उसके दो-तीन व्यक्ति भी थे, उन्होंने आरक्षक विकास के साथ मारपीट शुरू कर दी थी और उसके दोस्त पीयूष को हॉकी से मारा, तो पीयूष भाग गया फिर आरक्षक विकास ने आरोपीगण से कहा वह पुलिस वाला है, समंस वारण्ट भी दिखाए तो आरोपीगण ने समंस वारण्ट फाड़ दिए और मां-बहन की गंदी गंदी गालियां दी और उसे बुलेरो गाडी में डालकर बोले कि आज तुझे जान से खत्म कर देंगे फिर उसे ले जाकर एक खण्डर मकान में बंद करके मारा, जिससे विकास को पूरे शरीर पर चोट आई थी। सूचना पर से थाना औद्योगिक क्षेत्र के अपराध क्रमांक 1050/2021, अन्तर्गत धारा 364, 353, 332, 342, 294, 506, 34 दण्ड संहिता का प्रकरण का पंजीबद्ध कर अभियोग पत्र न्यायालय में प्रस्तुत किया, जिसमें प्रकरण में अभियोजन के द्वारा कुल 12 गवाह कराए गए।

उक्त प्रकरण में माननीय प्रधान सत्र न्यायाधीश जिला देवास के द्वारा आरोपी राहुल पिता गजराज सिंह, सौरभ पिता तेजेंन्द्र डोगरा, गोकुल पिता बाबूलाल राठौर एवं अतुल पिता दिलीप शर्मा को धारा 333 भादवि में 5 वर्ष का सश्रम कारावास तथा 5000/-रूपए अर्थदण्ड एवं धारा 364 में 5 वर्ष का सश्रम कारावास और 5000/-रूपए अर्थदण्ड तथा धारा 342 एक वर्ष का सश्रम कारावास रूपए 1000/- रूपए का अर्थदण्ड अधिरोपित किया।

उक्त प्रकरण में शासन की ओर से पैरवी कर्ता प्रभारी जिला लोक अभियोजक श्रीमती जयन्ती पौराणिक द्वारा संपादित की गई एवं कोर्ट मोर्हीरर भरत भाटी का सराहनीय सहयोग रहा।

कलेक्टर ने गोटेगांव में अधिकारियों की ली बैठक

नरसिंहपुर। कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले ने जनपद पंचायत कार्यालय गोटेगांव के सभाकक्ष में अनुविभागीय अधिकारियों की समीक्षा बैठक ली। बैठक में कलेक्टर ने राजस्व, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, स्वास्थ्य विभाग, उद्यानिकी, खाद्य और महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यों की विस्तार से समीक्षा की।

बैठक के पूर्व कलेक्टर श्रीमती पटले ने बगतला तालाब में पौधरोपण किया। उन्होंने यहां जामुन का पौधा रोपा। इस दौरान एसडीएम श्रीमती देवंती परते, सीएमओ श्री राजेश मेहतेल, समाज सेवी श्री सरदार सिंह पटेल सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी मौजूद थे। जनपद पंचायत कार्यालय के सभाकक्ष में आयोजित बैठक में कलेक्टर श्रीमती पटले ने स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा करते हुए कहा कि बीसीजी वैक्सीनेशन किया जाना है। इसमें महिला एवं बाल विकास और स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में कैम्पों का आयोजन किया जाये, जिसमें सचिव व पटवारी भी शामिल हों। यह महत्वपूर्ण कार्य है। साथ ही आंगनबाड़ी केन्द्रों में आयोजित होने वाले मंगल दिवस के कार्यक्रम में स्थानीय अमला विशेष रूप से मौजूद रहे। इसके अलावा लाड़ली लक्ष्मी योजना के अंतर्गत समग्र ई-केवायसी कार्य के लिए राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन का अमला भी हितग्राहियों के मोबलाइजेशन में सहयोग करें। राजस्व विभाग की समीक्षा करते हुए उन्होंने बताया कि जिला स्तर पर राजस्व अधिकारियों की समीक्षा बैठक पूर्व में हुई है। जिसमें उन्होंने निर्देशित किया है कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि में अभी भी किसान हितग्राहियों की ई-केवायसी का कार्य अभी नहीं हुआ है, इसमें पटवारियों को कार्य करने की आवश्यकता है। पेडिंग ई- केवायसी को पूर्ण करें। इसके अलावा साइबर तहसील के मामले में निर्धारित समय सीमा का पालन किया जाये। राजस्व प्रकरणों के अंतर्गत सीमांकन में सूचना की तामिली अधीनस्थ अमले द्वारा दी जाये। बैठक में ग्राम बेदू पटवारी बगैर अनुमति के अनुपस्थित होने पर वेतन काटने के निर्देश दिये। कलेक्टर श्रीमती पटले ने बैठक में मौजूद पटवारियों को अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही करने के निर्देश भी दिये। बैठक में कलेक्टर श्रीमती पटले ने लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के अंतर्गत जल जीवन मिशन की नल- जल योजना की प्रगति की भी जानकारी ली। उन्होंने जल निगम द्वारा जिन गांवों में पायली योजना के तहत टंकी बन चुकी है, इसकी जानकारी संबंधित अधिकारियों को प्रस्तुत करने के लिए निर्देशित किया। इसके अलावा उन्होंने कहा कि नल- जल योजना में पाइप लाइन बिछाने के उपरांत सड़कों के रेस्टोरेशन पर भी ध्यान दिया जाये। किसी भी स्थिति में कोई व्यक्ति अवैध रूप से पाइप लाइन कनेक्शन न लें। साथ ही पंचायत जल कर वसूली का भी कार्य नियमित तौर पर करें।

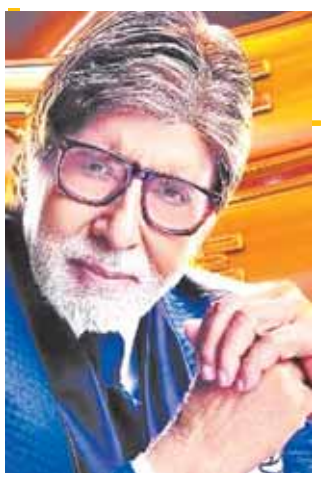

कौन बनेगा करोड़पति-16

'जिंदगी है, हर मोड़ पर सवाल पूछेंगी'

'कौन बनेगा करोड़पति' यानी केबीसी के सीजन-16 का लोग बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। अमिताभ बच्चन एक बार फिर कंटेस्टेंट्स को उनके ज्ञान के साथ हॉट सीट पर उलझाने के लिए तैयार हैं। शो का पहला प्रोमो सामने आ चुका है, जिसमें अमिताभ कहते हैं 'जिंदगी है, हर मोड़ पर सवाल पूछेगी, जवाब तो देना होगा!'

साल 2000 में बॉलीवुड के 'शहंशाह' अमिताभ बच्चन ने छोटे पर्दे पर एक नए अंदाज में डेब्यू किया था। वह क्विज शो 'कौन बनेगा करोड़पति' के होस्ट के तौर पर दर्शकों के दिलों में ऐसे छाए कि तब से लगातार अपने सवालों के जरिए लोगों को लखपति से करोड़पति बना रहे हैं। 2024 में भी 'कौन बनेगा करोड़पति' का 16वीं सीजन बिग बी होस्ट करने वाले हैं। जो जल्द टेलीकास्ट होने वाला है। हाल ही में शो का प्रोमो सामने आया है, जिसको देखने के बाद से लोगों के बीच की एक्साइटमेंट और बढ़ गई।

सोनी टीवी पर एक बार फिर से केबीसी वापस आ रहा है। सोनी ने दो प्रोमो शेयर किए हैं, जिसमें दिखाया गया है कि मिडिल क्लास फैमिली को कितना स्ट्रगल करना पढ़ता है। एक वीडियो में दिखाया गया कि एक शख्स को कैसे उसके पत्नी के ट्रांसफर के बाद अपने ही घर वालों से तानें सुनने पड़ते हैं। क्योंकि, वह अपनी पत्नी के लिए घर छोड़ने के लिए तैयार हो जाता है। घर वालों की बातों को सुन वो लड़का कहता है। 'एक पत्नी के लिए उसका पति खड़ा नहीं होगा तो कौन होगा?' इसके बाद अमिताभ

बच्चन कहते हुए दिखते हैं 'जिंदगी हर मोड़ पर सवाल पूछेगी, जवाब तो देना होगा।'

दूसरे प्रोमो में एक यंग लड़की दिखाई देती है, जो कि अपनी मां से डांट खा रही है। मां कहती है कि कौन शादी करेगा, तुझसे तेरे जैसे पहाड़ चढ़ने वाली लड़की के साथ? इसके बाद लड़की मुस्कुराती है और कहती है 'मां, ऐसा लड़का शादी करेगा, जिसकी सोच पहाड़ों से भी ऊंची हो!' इसके बाद अमिताभ बच्चन कहते हुए दिखते हैं, 'जिंदगी हर मोड़ पर सवाल पूछेगी, जवाब तो देना होगा।'

15वें सीजन के आखिरी एपिसोड में अमिताभ बच्चन ने अपनी स्पीच से सभी को इमोशनल कर दिया था। उन्होंने कहा था देवियों और सज्जनों, अब हम जा रहे हैं और कल से ये मंच नहीं सजेगा। अपनों से ये कह पाना कि कल से हम यहां नहीं आ पाएंगे, न कहने की हिम्मत होती है और न मन होता है। बिग बी की इस स्पीच के बाद केबीसी के फैंस काफी भावुक नजर आए थे।

रियल बॉक्स

परदे पर भक्ति से भरे गीतों का माहौल थम क्यों गया!

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।

लोगों की देवी-देवताओं पर अगाध श्रद्धा होती हैं। उन्हें विश्वास होता है कि भगवान हर उस व्यक्ति की सुनते हैं, जो उन्हें दिल से याद करता है। मंदिर में प्रसाद चढ़ाने के अलावा भक्ति का सबसे आसान उपाय है भगवान की भक्ति में गीत या भजन गाना। फिल्मों में भी हमेशा यही दिखाया जाता है कि किस तरह एक भजन सारे हालात बदल देता है। ख़ास बात यह भी कि धार्मिक फिल्मों में ही भक्ति हों, ये जरुरी नहीं! मल्टीस्टार फिल्मों में भी ऐसे कई भक्ति गीत फिल्माए गए, जो लोकप्रिय हुए और आज भी इन्हें सुना जाता है। 1979 में अमिताभ बच्चन और शशि कपूर की फिल्म 'सुहाग' आई थी जिसमें मां दुर्गा की भक्ति पर गया गया भजन 'नाम रे सबसे बड़ा तेरा नाम रे, ओ शेरोवाली' काफी लोकप्रिय है। आज भी नवरात्रि के दिनों में यह आज सुनाई देता है। अमिताभ और रेखा पर मंदिर में फिल्माए इस भजन पर दोनों ने गरबा भी किया था। आशा भोंसले और मोहम्मद रफी की आवाज का यह गीत यादगार बन गया। जब भी कोई व्यक्ति या फिल्मों के नायक (या नायिका) परेशानी में होते हैं, उन्हें सबसे पहले भगवान ही याद आता है। ऐसे में या तो वो मंदिर जाता है, वहां भगवान से मुसीबत से मुक्ति की गुहार लगाता है। यदि कथानक के मुताबिक यह स्थिति फिल्मों में आती है, तो जो व्यक्ति मुश्किल में होता है, वो धार्मिक गीत या भजन गाता है। ऐसी कई फ़िल्में आई जिनमें भक्ति गीत या भजन गाते ही भगवान ने उसकी बात सुन ली! लेकिन, वास्तविक जीवन में यह सब होता भी है, तो उसमें समय लगता है।

फिल्म इतिहास के पन्ने पलटे जाएं तो ब्लैक एंड व्हाइट के ज़माने यही होता आ रहा है और आज भी इसमें कुछ नहीं बदला। कुछ फिल्मों के भक्ति गीत और भजन आज भी इतने लोकप्रिय हैं कि तीज-त्यौहार पर ये बजते सुनाई देते हैं। लेकिन, ये गीत परेशान लोगों को भी मानसिक शांति देते हैं। फिल्मों ने ऐसे कई भजन और भक्ति गीत दिए हैं, जिन्हें सुनकर और गाकर कुछ पलों के लिए हम अपने दुःख भूल जाते हैं। ऐसी स्थिति में मन में विश्वास की एक ज्योति जल उठती है। भक्ति को शक्ति देने वाले कई भक्ति गीत और भजन है। लेकिन, मंदिरों में भक्ति गीत सुनाने वाली इन फिल्मों में मंदिर का एक दृश्य ऐसा भी था, जो आज भी दर्शक भूले नहीं होंगे! फिल्म 'दीवार' में अमिताभ बच्चन का मां की बीमारी पर बोला गया संवाद भक्ति से इतर था। सफल धार्मिक फिल्मों के लोकप्रिय गीतों की बात की जाए तो 1975 में आई फिल्म 'जय संतोषी माँ' कम बजट की फिल्म थी। पर, कमाई के मामले ये आज तक की शीर्ष ब्लॉकबस्टर फिल्मों में गिनी जाती है। इस फिल्म के सभी गीत खूब चले। उषा मंगेशकर, महेंद्र कपूर और मन्ना डे ने कवि प्रदीप के लिखे भक्ति गीत गाए थे। करती हूँ तुम्हारा व्रत मैं स्वीकार करो माँ, यहां वहां मत पूछो कहां कहां, मैं तो आरती उतारू रे, मदद करो संतोषी माता, जय संतोषी माँ, मत रो मत रो आज राधिके और यहां वहां जहां तहां मत पूछो कहां कहां ऐसे भक्ति गीत हैं जिन्हें देवी आराधना वाले मंदिरों में अकसर सुना जाता है। फिल्म इतिहास में ऐसे कई गायक हैं जिन्होंने कालजयी धार्मिक गाने, भजन और आरतियां गाई। नई और पुरानी फिल्मों में भगवान की भक्ति को लेकर कई अच्छे गीत और भजन लिखे गए।

ये गीत इसलिए लोकप्रिय हुए, क्योंकि इन्हें गायकों ने पूरी तन्मयता के साथ गाकर दर्शकों को भाव विभोर किया। इनमें सबसे ज्यादा लोकप्रियता मिली अनुराधा पौडवाल, नरेंद्र चंचल और अनूप जलोटा को जो धार्मिक गीतों के गायक हैं। फिल्मों में धार्मिक गीत और भजन गाने वालों की भी अपनी अलग पहचान होती है। ऐसे गीत और भजन गाने वाले गायक भी लंबे समय तक तय रहे। चंचल, अनूप जलोटा का इसमें काफी योगदान रहा। ऐसी फिल्मों में काम करने वाले कलाकारों का भी सकारात्मक पक्ष यह रहा कि दर्शकों में इनके प्रति भक्ति भाव कुछ ज्यादा ही होता है। 'जय संतोषी मां' में माता संतोषी का किरदार निभाने वाली अनीता गुहा को लोग पूजने लगे थे। 'रामायण' सीरियल में राम और सीता बने अरुण गोविल और दीपिका चिखलिया को आज भी लोग भक्ति भाव से देखते हैं। इसी का प्रताप था कि 'रामायण' के प्रसारण के इतने साल बाद अरुण गोविल लोकसभा की मेरठ सीट से चुनाव जीत गए। हिंदी फिल्मों में सबसे ज्यादा भगवान के रोल करने वाले कलाकार महिपाल को तो लोग भगवान ही मानने लगे थे। उन्होंने 35 से ज्यादा फिल्मों में भगवान या ऐसे किरदार निभाए। वे तुलसीदास भी बने और अभिमन्यु भी। महिपाल ने अपने जीवन काल में संपूर्ण रामायण, वीर भीमसेन, वीर हनुमान, हनुमान पाताल विजय, जय संतोषी माँ जैसी सफल धार्मिक फिल्मों में काम किया। उन्होंने अपने करियर में भगवान राम, कृष्ण, गणेश और विष्णु का किरदार इतने बार निभाया कि असल जिंदगी में भी लोग इन्हें पूजने लगे थे। वे जहां जाते लोग इनके पैर छूते और आशीर्वाद की कामना करते थे।

याद किया जाए तो ऐसे कालजयी भक्ति गीतों में 1965 में आई फिल्म 'खानदान' के गीत 'बड़ी देर भई नंदलाला तेरी राह तके बृजबाला' को रखा जा सकता है। इस भजन को सुनील दत्त पर फिल्माया गया था। राजेंद्र कृष्ण के लिखे इस भजन को मोहम्मद रफी ने गाया था। जन्माष्टमी के अवसर पर अभी भी ये गीत गूंजता है। यह गीत फिल्म की कहानी को देखते हुए भी सटीक था। उससे पहले 1952 में आई फिल्म 'बैजू बावरा' का गीत मोहम्मद रफी की हिंदू भजनों के प्रति लगाव का सबसे बेहतर प्रमाण कहा जा सकता है। 'ओ दुनिया के रखवाले, सुन दर्द भरे मेरे नाले' के बोल आज भी किसी दुखी व्यक्ति का चेहरा सामने ले आते हैं। शकील बदायूंनी के लिखे इस गीत में नौशाद ने संगीत दिया था। ख़ास बात ये कि इस भक्ति गीत के गायक, गीतकार और संगीतकार तीनों ही मुस्लिम थे। 1954 में आई फिल्म 'तुलसीदास' के गीत 'मुझे अपनी शरण में ले लो राम' को भी मोहम्मद रफी ने अपनी आवाज दी है और बीते जमाने के विख्यात संगीतकार चित्रगुप्त ने इसे संगीत से सजाया था। गीत में राम को आराध्य मानकर अपना सब कुछ अर्पण करने की बात कही गई है।

1958 की फिल्म 'दो आंखें बारह हाथ' का गीत 'ऐ मालिक तेरे बंदे हम, ऐसे हो हमारे करम' बुराई पर अच्छाई की जीत का सबसे बेहतरीन प्रमाण कहा जा सकता है। इस गीत में नुकसान पहुंचाने वाले डाकुओं को इंसानियत के नाम पर मदद पहुंचाई जाती है। भरत व्यास ने इस गीत को लिखा और वसंत देसाई ने इसे संगीत दिया था। लता मंगेशकर ने अपनी मधुर आवाज ने मानो इस गीत को अमर कर दिया। 1965 की फिल्म 'सीमा' में बलराज साहनी पर फिल्माया भजन 'तू प्यार का सागर है, तेरी एक बूंद के प्यासे हम' में आतुर मन की व्यथा सुनाई देती है। शैलेंद्र के लिए इस गीत को मन्ना डे ने अपनी आवाज दी और संगीत शंकर जयकिशन ने दिया था। दिलीप कुमार की 1970 में आई फिल्म 'गोपी' का महेंद्र कपूर की आवाज में गाया गीत 'रामचंद्र कह गए सिया से ऐसा कलयुग आएगा' ऐसा भजन है जिसमें भविष्य का संकेत था। आशय यह कि सच्चा आदमी भटकेगा और झूठे के पास सबकुछ होगा। राजेंद्र कृष्ण के गीत को कल्याणजी-आनंदजी ने संगीत दिया था। भक्ति गीतों में सांई बाबा पर रचे गए गीत भी बड़ी संख्या में हैं। 1977 की फिल्म 'अमर अकबर एंथोनी' का गीत 'तारीफ तेरी निकली है दिल से, आई है लब पे बनके कव्वाली' साईं के भक्तों के लिए एक तरह से संजीवनी है। मोहम्मद रफी की आवाज का इस गीत में रफी की लंबी तान सुनने वाले को झंकृत कर देती है।

'सरगम' (1979) संगीत पर केंद्रित फिल्म थी। पर, इसका एक गीत 'रामजी की निकली सवारी, रामजी की लीला है न्यारी' में भगवान राम की महिमा का बखूबी वर्णन है। दशहरे में जब रामजी की सवारी निकलती है, तो इस गीत के बिना माहौल नहीं बनता। इस गीत को सुनकर मनोभावों में राम का नाम समा जाता है। आनंद बक्षी के लिखे इस गीत को मोहम्मद रफी ने गाया था और इसका संगीत लक्ष्मीकांत प्यारेलाल ने दिया था। 'अंकुश' (1986) एक अलग तरह की फिल्म थी, लेकिन, इसका एक भक्ति गीत 'इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना' टूटे मन को दिलासा देता हुआ सा लगता है। गीतकार अभिलाष ने इसे लिखा और पुष्पा पागधरे और सुषमा श्रेष्ठ ने इसे गाया है। कुलदीप सिंह ने इसमें संगीत दिया। 'भर दो झोली मेरी या मुहम्मद, लौटकर मैं ना जाऊंगा खाली' वास्तव में तो एक गैर फ़िल्मी गीत था, पर इसे 2015 में आई फिल्म 'बजरंगी भाईजान' में शामिल किया गया था। फिल्म का हीरो सलमान खान एक भटकी हुई बच्ची को उसके देश पाकिस्तान छोड़ने जाता है। इस दौरान उसे होने वाली परेशानियों को दूर करने के लिए इस अदनान सामी के गाए इस गीत को प्रार्थना के रूप में फ़िल्माया गया। कौसर मुनीर के लिखे इस गीत की धुन संगीतकार प्रीतम ने बनाई थी। लेकिन, लगता है फ़िल्मी कथानक में किरदारों को अब भगवान की कृपा की जरुरत नहीं है। शायद इसीलिए अब भगवान को फिल्मों से किनारे किया जा रहा है। लंबे समय से ऐसी कोई फिल्म नहीं आई, जिसमें धार्मिक गीत, भजन या आरती सुनाई दी हो।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

माधुरी और रेहान के इवेंट से लोग नाराज

माधुरी दीक्षित को ह्यूस्टन स्थित पाकिस्तानी मूल के प्रमोटर रेहान सिद्दीकी के साथ सहयोग करने के लिए आलोचना का सामना करना पड़ रहा है। इसके कथित तौर पर आईएसआई से संबंध हैं और भारत सरकार ने उसे ब्लैक लिस्ट में डाल रखा है। सोशल मीडिया पर माधुरी और रेहान के इवेंट के पोस्टर की एक तस्वीर शेयर की गई, जो ह्यूस्टन (टेक्सास) में स्वतंत्रता दिवस के ठीक एक दिन बाद 16 अगस्त को होगा।

रेहान के साथ काम करने के लिए माधुरी दीक्षित की आलोचना की जा रही है। लोगों माधुरी से इस इवेंट को नहीं करने का निवेदन किया। उन्होंने भाजपा मंत्री किशन रेड्डी का चार साल पुराना लेटर भी शेयर किया। जिसमें कहा गया है कि रेहान को भारत सरकार ने 'ब्लैकलिस्ट' कर दिया है। सोशल मीडिया पर लिखा गया 'यह देखकर हैरान हूं कि माधुरी दीक्षित ने पाकिस्तानी मूल के प्रमोटर के साथ सहयोग किया है, जो भारतीय एजेंसियों के रडार पर है और भारत सरकार ने उसे ब्लैकलिस्ट कर दिया है। गृह राज्यमंत्री के रूप में मंत्री किशन रेड्डी ने सार्वजनिक रूप से घोषणा की थी कि ह्यूस्टन स्थित पाकिस्तानी मूल के प्रमोटर रेहान सिद्दीकी को ब्लैक लिस्ट कर दिया गया है। उन्होंने बॉलीवुड हस्तियों से उनके साथ काम न करने का अनुरोध किया है।

उन्होंने आगे कहा कि क्या उनके पास पाकिस्तानी मूल के प्रमोटर के साथ काम करने का कोई कारण है। जिस पर आईएसआई से संबंध रखने का आरोप है और जिसे भारत सरकार ने ब्लैकलिस्ट कर दिया? क्या माधुरी दीक्षित के दोस्त, परिवार और फैंस उन्हें इस आदमी के इतिहास के बारे में बता सकते हैं। और उन्हें मना करें? यह हमारे सुरक्षा बलों और उन बहादुर पुरुषों और महिलाओं के लिए बहुत हतोत्साहित करने वाला है जिन्होंने भारतीय सीमाओं को सुरक्षित रखने के लिए अपना जीवन लगा दिया है। मुझे उम्मीद है कि माधुरी दीक्षित को इसे नहीं करने की समझ होगी।

पोस्ट पर रिएक्शन देते हुए एक यूजर ने लिखा कि माना कि फिल्मों से कोई पैसा नहीं है, लेकिन रियलिटी शो की कमाई पर्याप्त नहीं है। पति डॉक्टर है। ऐसा लगता है कि रोजमर्रा के खर्चों के लिए सब कम पड़ रहा है। एक अन्य ने लिखा 'माधुरी दीक्षित ने सच में निराश किया है। मुझे लगता है कि बॉलीवुड के लोग भरोसे के लायक नहीं हैं, लेकिन मेरे मन में उनके लिए सम्मान था। मैं अब इस बात से काफी आश्वस्त हूं कि वे सभी एक जैसे हैं। दूसरे ने लिखा 'मैं अपने पूरे जीवन में माधुरी का बहुत बड़ा फैन रहा हूं। लेकिन, किसी भी कीमत पर पैसा कमाने की इस बेताबी को नहीं समझ सकता। एक्टर्स को दोष नहीं दे सकता। समझना चाहता हूं कि उनके मैनेजर और सलाहकार क्या करते हैं। उन्हें किस चीज के लिए पैसे मिलते हैं?

सूर्या की 'कंगुवा' 10 अक्टूबर को रिलीज होगी

सूर्या स्टारर फिल्म 'कंगुवा' का टीजर रिलीज हुआ। इसमें रोमांचक और विशाल दुनिया की झलक दिखाई गई है, जिसमें सुपर स्टार सूर्या को एक शक्तिशाली योद्धा और बॉबी देओल को खलनायक के रूप में दिखाया गया। दोनों को पहले ऐसे कभी न देखे जाने पर, इस फिल्म को लेकर एक अलग ही उत्सुकता देखने को मिल रही है। फिल्म से जुड़े अपडेट्स ने एक्साइटमेंट को बढ़ा दिया है। इस फिल्म को इसी साल 10 अक्टूबर को रिलीज किया जाएगा। 'कंगुवा' इस साल की सबसे बड़ी और सबसे महंगी फिल्म है। 350 करोड़ से ज्यादा के बजट के साथ यह पुष्पा, सिंघम और कई दूसरी बड़ी फिल्मों से भी बड़ी है। फिल्म की शूटिंग अलग अलग कॉन्टिनेंट्स के 7 अलग देशों में की गई है। मेकर्स के दिमाग में फिल्म के लिए एक अपनी तरह का लुक है। क्योंकि, यह प्री-हिस्टोरिक पीरियड को दिखाने वाली अनोखी फिल्म है। मेकर्स ने टेक्निकल डिपार्टमेंट जैसे एक्शन और सिनेमेटोग्राफी के लिए हॉलीवुड एक्सपर्ट्स को हायर किया है। फिल्म में कुल 10 हजार लोगों से ज्यादा के साथ शूट किया गया, सबसे बड़ा वॉर सीक्वेंस भी है।

साठ साल पहले के 'संगम' को याद करते हुए

अशोक जोशी

राज कपूर की पहली रंगीन फिल्म 'संगम' के प्रदर्शन को साठ साल हो गए हैं। 18 जून 1964 को प्रदर्शित फिल्म 'संगम' सिनेमा के इतिहास में एक क्लासिक फिल्म मानी जाती है। इस

फिल्म की खासियत है कि यह आज भी नई लगती है। लगभग 80 लाख रुपए के बजट में बनी इस फिल्म ने दुनियाभर में आठ करोड़ रुपए की कमाई की और उस साल की सबसे अधिक कमाई करने वाली फिल्म बन गई थी। इस फिल्म का निर्माण, निर्देशन और संपादन खुद राज कपूर ने किया था। दुनिया के बेहतरीन स्थानों पर फिल्माई गई इस फिल्म की कहानी इंदरराज आनंद ने लिखी थी।

कालजयी फिल्म 'संगम' को रिलीज हुए 60 साल हो गए। इस फिल्म में राज कपूर, राजेंद्र कुमार, और वैजयंतीमाला ने मुख्य भूमिकाएं निभाई थीं। इसके अलावा इफ्तेखार, अचला सचदेव, ललिता पवार, नाना पलसीकर, और राज मेहरा ने भी अहम किरदार निभाए। काट छांटकर 24 रीलों में समेटी गई 'संगम' की एक खासियत यह भी थी कि इसमें दो इंटरवल थे। जब इसे प्रदर्शित किया गया तो सिनेमाघरों ने इसके लिए विशेष टिकट छपवाए थे और देशभर के सिनेमाघरों ने अपनी टिकट दरें बढा दी थी। 'संगम' के संगीत ने भी खूब धूम मचाई थी। फिल्म में आठ गीत थे, जिनमें से चार गीत शैलेंद्र ने और चार हसरत जयपुरी ने लिखे थे। इन गीतों को मुकेश, लता मंगेशकर, महेंद्र कपूर, मोहम्मद रफी और विवियन लोबो ने गाया था। संगीतकार जोड़ी शंकर-जयकिशन ने संगीत तैयार किया था, और यह फिल्म उनके करियर की सबसे सफल फिल्मों में से एक रही थी। फिल्म के निर्माण के समय से ही गाने इतने लोकप्रिय हो गए थे कि उन दिनों प्रसारित बिनाका गीतमाला में इसके गीत प्रदर्शन से पहले ही टॉप पायदान पर पहुंच कर रिटायर भी हो गए थे।

राज कपूर ने 'संगम' को लेकर जो सपना देखा था, वह हुबहू वैसा नहीं था। उन्होने सबसे पहले इसमें अपने साथ भूमिका के लिए दिलीप कुमार को सह कलाकार की भूमिका के लिए पसंद किया था। उनसे बातें भी हुई थी। लेकिन, दिलीप कुमार को इसमें अपनी फिल्म 'अंदाज' का दोहराव लगा, इसलिए उन्होंने काम करने से इंकार कर दिया। इसके बाद राज कपूर ने देव आनंद को राजेन्द्र कुमार वाला

रोल सुनाया था। उस दौरान वह अपनी फिल्म 'गाइड' की शूटिंग कर रहे थे। इसके बावजूद वे 'संगम' का हिस्सा बनने को तैयार थे। उनकी यही शर्त थी कि वह राजेन्द्र कमार की जगह राज कपूर वाला रोल करेंगे। क्योंकि, राजेन्द्र कमार को क्लाइमेक्स में मरना था और देव आनंद अपनी फिल्म 'गाइड' के क्लाइमेक्स में भी मरते हुए दिखाई दे रहे थे। इसलिए उन्हें डर था कि दर्शक उन्हें मरते देखना पसंद नहीं करेंगे। इसलिए गोपाल वाला रोल राजेन्द्र कुमार के हिस्से आया।

'संगम' फिल्म से जुड़ी कुछ दिलचस्प घटनाओं में एक यह भी है कि प्रीमियर के बाद लेखक इंदर राज आनंद और राज कपूर के बीच किसी बात पर इतनी ज़बरदस्त लड़ाई हो गई कि इंदर राज आनंद ने राज कपूर को सबके सामने थप्पड़ मार दिया। इसके बाद राज कपूर ने इंदर राज के खिलाफ माहौल बना दिया। जिसके चलते इंदर राज आनंद के हाथ से 18 फिल्में निकल गईं और उन्हें हार्ट अटैक आ गया। जब राज कपूर को इस बात का पता चला तो उन्होंने इंदर राज आनंद से माफी मांगकर विवाद को विराम दिया।

फिल्म का एक और रोचक प्रसंग यह है कि गीत 'बोल राधा बोल संगम होगा कि नहीं' की उत्पत्ति राज कपूर के एक टेलीग्राम से हुई थी। इसमें उन्होंने वैजयंती माला से पूछा था कि क्या संगम होगा? तब वैजयंती माला ने जवाब दिया था 'होगा होगा होगा ...' और यही फिल्म का लोकप्रिय गीत बन गया। फिल्म के गीत 'हर दिल जो प्यार करेगा' को पहले मुकेश और लता मंगेशकर के साथ मोहम्मद रफी गाने वाले थे! लेकिन, रायल्टी को लेकर लता मंगेशकर और रफी के बीच जारी मनमुटाव के कारण रफी की जगह महेंद्र कपूर ने यह गीत गाया।

देश विदेश में फिल्माई इस फिल्म के कुछ दृश्य आज भी दर्शकों की समझ से परे हैं। फिल्म में राजेन्द्र कुमार वैजयंती माला को एक प्रेम पत्र लिखते हैं। वह पत्र राज कपूर को मिल जाता है। वह उसे पढ़ना चाहते हैं, लेकिन यह कहकर पढ़ नहीं पाते कि यह तो हिंदी में है। साथ ही पंडित जवाहरलाल नेहरू की राजभाषा नीति की प्रशंसा में कहते है कि पंडित जी सही कहते है कि हिंदी सीखना सभी के लिए बहुत जरूरी है। यदि हिंदी का पत्र हिंदी फिल्म का एक गरीब नायक नहीं पढ़ पाता, यह सुनकर अजीब लगता है। 'संगम' के साथ सबसे चर्चित घटना यह थी कि फिल्म निर्माण के दौरान राज कपूर और वैजयंती माला एक दूसरे के इतने नजदीक आ गए थे कि नाराज होकर कृष्णा कपूर अपने बच्चों को लेकर होटल में रहने लगी थी। लेकिन, कुछ लोगों का मानना है कि यह सब फिल्म को प्रचारित करने के लिए की गई पब्लिसिटी का एक हिस्सा था।

फिल्म ने 12वें फिल्मफेयर अवॉर्ड्स में चार पुरस्कार जीतेः बेस्ट डायरेक्टर (राज कपूर), बेस्ट एक्ट्रेस (वैजयंतीमाला), बेस्ट एडिटिंग (राज कपूर), और बेस्ट साउंड डिज़ाइन (अलाउद्दीन खान कुरैशी)। लेकिन मजे की बात तो यह है कि इतने अधिक लोकप्रिय गीत संगीत के बावजूद संगम अपने संगीतकार शंकर जयकिशन को फिल्मफेयर अवार्ड नहीं दिलवा पायी। 1965 के सर्वश्रेष्ठ संगीतकार का अवाडे उन दिनों नए नए आए संगीतकार लक्ष्मीकांत प्यारेलाल छिन ले गए थे जिन्हें अपनी छठी और सस्ती बनी ब्लेक एंड व्हाइट फिल्म दोस्ती के संगीत के लिए यह अवार्ड मिला था।

(अ) सरकारी फरमान के असर!

प्रकाश पुरोहित

उ **चुटकुला है या सच, नहीं पता, मगर है मजेदार! जो** कई बार सुना जा चुका है, फिर भी ताजा है! बालकवि बैरागी मंत्री थे, उनके इलाके का सरकारी कर्मचारी ना समय पर आता, न जाता। अधिकारी भी परेशान कि मंत्री के गांव का है। फिर भी शिकायत तो हो ही गई, तो उसे बुलाया गया।

'शिकायत है, तुम रोज देर से आते हो?' बैरागीजी ने पूछा।

'हां, लेकिन जाता भी तो जल्दी हूं!' उसने जवाब दिया।

'हां फिर तो ठीक है, कोई बात नहीं, ऐसे ही काम करो, जाओ।' अफसर मुंह देखता रह गया और कर्मचारी हंसता हुआ चला गया!

पहली गलती तो नेहरूजी की ही रही कि उन्होंने तीन बार कुर्सी संभाली, मगर एक बार भी सरकारी कर्मचारियों को उस तरह से चेतावनी नहीं दी, जैसी तीसरी बार शपथ लेने के फौरन बाद मोदी-सरकार ने जारी की है। ठीक है, मोदीजी को भी ग्यारहवें साल में ध्यान आया कि सरकारी दफ्तरों में कर्मचारी टाइम से आते-जाते नहीं हैं। यह क्या कम है कि 'देर से आए और दुरुस्त आए।'

सख्त लहजे में चेतावनी दी है कि कर्मचारियों की नींद और सुख-चैन गायब है। पुश्तों से काम करने का तरीका बदलने को कहा जाएगा तो किसे नींद आने वाली है। आश्चर्य तो इस बात पर होना चाहिए कि अब तक इस तरफ किसी सरकार ने ध्यान क्यों नहीं दिया! सेवा-शर्तों में ही इसको भी शामिल कर लेते कि समय से आना-जाना पड़ेगा तो आज यह दिन तो नहीं देखना पड़ता।

सरकार के इस ताजा, जनकल्याणकारी और सख्त रवैये का यह फौरन असर देखा जा रहा है कि कई कर्मचारी तो नौकरी छोड़ने का सोच रहे हैं या फिर वीआरएस लेने जा रहे हैं। उनकी बात भी सही है कि पार्ट टाइम नौकरी करते बिजनेस में जितना कमाते हैं, उसके मुकाबले सरकारी नौकरी में सिवाय रिश्वत और सूखी तनख्वाह के रक्खा ही क्या है! जो काम जिंदगी में नहीं किया, अब क्या खाक करेंगे। 'कटी उम्र मयखाने में, क्या ख़ाक मुसलमां होंगे' शेर यूं ही तो नहीं लिखा गया होगा।

सरकारी नौकरी के लिए अतिरिक्त कमाई को लात तो कोई मारने से रहा। चल रही थी तो चला रहे थे, इसके भरोसे तो बैठे नहीं थे। उम्मीद यही थी कि ये सरकार भी धकने देगी, मगर आप तो जानते ही हैं कि अमृत-काल चल रहा है तो सरकार की नजर से छोटी से छोटी बात भी नहीं बच सकती।

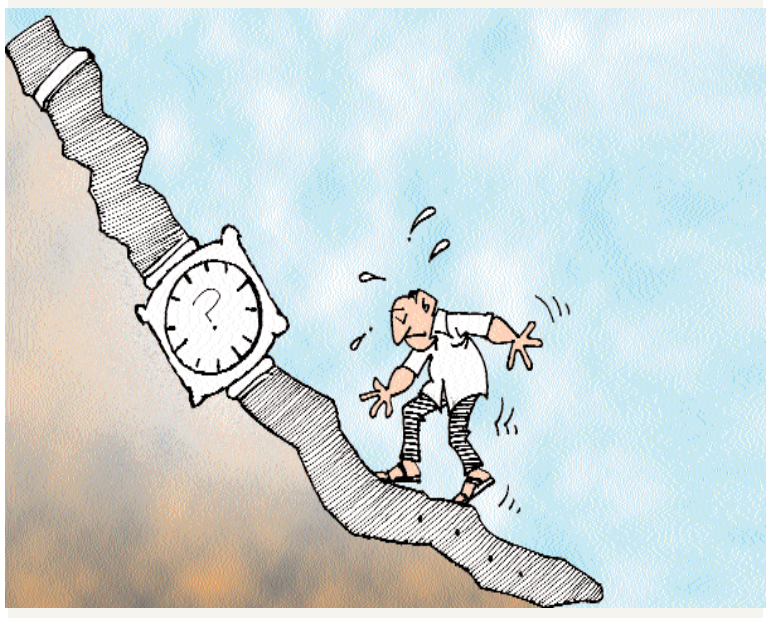

आश्चर्य और अफसोस कि सत्तर साल में किसी सरकार को यह होश नहीं आया कि सरकारी दफ्तर पर भी नजर डालें, जनता कितनी परेशान है कि अफसर तो मीटिंग में रहते हैं और क्लर्क फाइलें लाने ले जाने में। वैसे जिस आपातकाल को यह सरकार हर समय याद करती रहती है और याद दिलाती रहती है, अफवाह है, उस दौरान रेल के आने-जाने से जनता घड़ी का समय ठीक करती रहती थी। जितनी भीड़ यात्रियों की नहीं होती थी, उससे ज्यादा तो उन लोगों की होती थी, जिन्हें अपनी घड़ी सही करनी होती थी। इनमें भी ज्यादातर तो सरकारी कर्मचारी ही होते थे कि उन्हें समय से पहले पहुंचना होता था, वरना नौकरी भी जा सकती थी और घड़ी की घड़ी हो जाना थी।

कुछ लोग तो सिर्फ घड़ी बांधने के लिए ही सरकारी नौकरी करते थे कि इससे लड़की पर इम्प्रेशन अच्छा पड़ता था, घड़ी का ब्रांड देख कर लड़के की क्लास का पता चलता था। इमरजेंसी की सभी बुराइयों से सरकारों ने पल्ला झाड़ लिया और सरकारी दफ्तर, रेल और घड़ियां अपने हिसाब से चलने लगीं।

वैसे सरकार ने समय की पाबंदी लगा कर 'एक पत्थर से दो चिड़िया' मार ली है। इस बार भाजपा को मंदिर से इतनी उम्मीद थी कि बाकी जगह उम्मीद के बीज बोने की भी जहमत नहीं की (कृपया इसे इक्कावन लाख पौधे से ना जोड़ें), लेकिन नाशुक्री जनता ने मंदिर का मान तो रखा नहीं और बेरोजगारी को मुद्दा बना दिया।

माओ गलत कहते थे कि धर्म अफीम है, एक बार चटा दो तो फिर व्यक्ति हमेशा अंटा-गाफिल रहता है। यहां तो दो महीने में ही अफीम का नशा जाता रहा और गैर-सनातनी लोग खाली पेट, खाली बर्तन बजाने लगे। जब बहुमत से जनता ने दूर कर दिया तो भाजपा को समझ आई कि बेरोजगारी ऐसी ही रही तो अगली बार घर बैठना पड़ेगा।

चूंकि रोजगार तो सरकार दे नहीं सकती और रोजगार का मतलब यही तो होता है ना, सरकारी नौकरी। यदि इसका चार्म ही खत्म कर दिया जाए तो लोग अपने आप अपने काम-धंधे तलाश लेंगे, जैसे पकोड़े तलना या गटर की गैस से ईंधन का उत्पादन।

आल्हा-उदल में आता है ना, एक को मारे दो मर जाएं, तीसरा दहशत से मर जाए, तो सरकार ने भी यही किया है कि सरकारी कर्मचारियों को टाइट कर दिया है कि अब से अधिकारी हो या चपरासी सब ही दफ्तर में समय से पहले हाजिरी दर्ज कराएं, अगर देर से आना हो तो एक दिन पहले ही अर्जी दें ('क्या ये नियम पहले था ही नहीं')।

अधिकारी परेशान हैं कि रोज तो हम सात आठ बजे बाद जाते थे, अब पांच बजे ही घर पहुंच जाएंगे तो करेंगे क्या। सबसे बड़ी मुसीबत तो उनके परिवारों की है कि ये बिफोर टाइम ट्रेन का करें क्या! इस तरह से आप देखेंगे कि ढर्रा भले ही बदले या ना बदले, सरकारी रोजगार को जनता भूल जाएगी और सिर्फ इस वजह से किसी दल को बहुमत से दूर नहीं करेगी। यानी अगली बार बेरोजगारी तो मुद्दा रहेगा ही नहीं, सरकार ने शुरू में ही इंतजाम कर दिया है।

और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

''सरला देवी चौधरानी''

द्वा ''अलका सरावगी'' द्वारा रचित ''गांधी और सरला देवी चौधरानी'' से और ''स्वर्णा'' से सरलादेवी चौधरानी के जीवन के तौर तरीके का पता चलता है। मेरे खयाल से सबसे ज़्यादा प्रसिद्ध, ज्ञानी, राजनीतिज्ञ, महत्वाकांक्षी, जिद्दी अपने मन की करने वाली, नाना महर्षि देवेंद्रनाथ, नानी सारदासुंदरी माता-स्वर्णकुमारी, पिता जानकीनाथ, पति रामभज दत्त (पंजाबी) माता रवींद्र नाथ टैगोर की प्रिय भांजी, सरला देवी चौधरानी थी ये नाम उन्हें बंकिमचंद्र जी ने दिया बड़े बड़े नेताओं और साहित्यकारों के साथ जीवन बिताने वाली सरला देवी की कहानी को मैंने चाहा था केवल उनकी कहानी बनी रहने दूँ पर उनके नाम के साथ विवाह के बाद, पति के जेल जाने के बाद सदैव गांधी जी जड़े रहे। मैं चाहकर भी अलग नहीं कर पाई। सरला के सौम्य जीवन की शुरूआत मामा रवींद्रनाथ के संगीत गीत रचने और बंकिमचंद्र के सामिटय में बीती। सरला की माँ से सदैव दूरी रही। बंकिम चंद्र अपनी रचाये सरला से गवाते थे। गांधीजी ने सरला को बीसवी शताब्दी के पहले इंडियन नेशनल कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में ''नमो हिंदुस्तान खुद का लिखा गीत गाते देखा। अचानक 1919 में ''जलियाँ वाला कांड'' का विरोध करने के कारण उनके पति को 6 महीने का सजा हुई। सरला के लाहौर मे (बंगाल से आई सरला पंजाबी पति के साथ, पंजाब के रंग में रंग गई थी, खूब अच्छी पंजाबी बोलने लगी थी) गांधी जी का आगमन हुआ। कोई उसे बंगाल की जोन ऑफ आर्क कहता था कोई दुर्गा काली का अवतार बंगाली मर्दो को दब्बू, स्त्रीनुमा संबांधन से हटाने के लिये सरला देवी ने कलकत्ता के मोहल्ले मोहल्ले में युवको को व्यायाम कुश्ती तलवारबाजी, लठ्ठ बाजी सिखाने के क्लब खुलवा दिये। गांधी जी सीधे सरला देवी के घर पहुँचे उनकी हंसी देख वे मुग्ध रहे। शाम को गांधी जी ने सरलादेवी को अपने बचपन से अभी तक की कथा सुननी चाही। सरला बंकिमचंद्र के सामने मात्र अठारह बरस की थी अक्सर चाय पीने उनका घर आना होने लगा रवींद्र, बंकिम वेदो, गीता, आनंदमठ पर बात करने तो यूँ सरला साधारण स्त्रियों की जमात से दूर हो गई। जिद करके माँ से नाराज हो मैसूर के महारानी गर्ल्स स्कूल में पढ़ाने आ गई परंतु एक हादसे के कारण उसे वापस आना पड़ा। बेथून कॉलेज से बी.ए. पास कर ''पद्मावती गोल्ड मैडल प्राप्त करना टैगोर परिवार के लिये बड़ी बात नहीं थी। उसके पिता ने पीराली ब्राह्मण की लड़की स्वर्णा से जिद करके विवाह किया था वही जिद उसकी रगो में थे उसे लगता माँ से उसको वो स्नेह नहीं मिला जो मिलना चाहिये था। रवि मामा ने रोमांटिक कवियों-बायरन, शेली, कीट्स से सरला का परिचय करवाया। साइंस लेने की जिद में वो अकेली लड़को के बीच पढ़ती थी। सरला को बीच में हास्य व्यंग्य लिखने का दौरा पड़ा पर उसने अपना नाम नहीं डाला पर सबने पहचान कर खूब धिक्कारा तब सरला ने प्रेम काव्यों पर लिखना शुरू किया और ''भारती का संपादन भी अब सरला ने संस्कृत में एम.ए. की ठानी। नानामोशाय उसका खूब पक्ष लेते थे उसने देखा मैसूर में स्त्रियाँ भरपूर श्रृंगार कर सड़को पर घूमती थी उन्हें खूब आज़ादी थी। कहानी रोककर सरला स्वयं गांधी जी के खाने पीने में लगी सास को बड़ा आश्चर्य हुआ गांधी जी में तंज किया कि वो अपने हाथ से कुछ नहीं करती इसमें गांधी जी ने अपनी कथा भी सरला को सुनाई जो फिर भी सुनाऊँगी। अभी तो दोनों की मित्रता इन कथा कहानियों, अधिवेशन सभाओं भाषणों (क्योंकि गांधी जी कमज़ोर थे थक जाते थे सो बाकी भाषण सरला दमदारी से पंजाबी में देने लगी)। अब वो कविता गान के जरिये देश सेवा करने लगी नानामोशाय ने भी उसके शादी ना करने के फैसले का स्वागत किया। सरला ने युवको के लिये ''प्रतापादित्य'' नाटक खेला जाना तय किया, जिसकी रवींद्र ने निंदा की। सरला ने घर के पिछवाड़े युवको के लिये व्यायाम शाला खुलवा दी। पहली बार में गांधी जी के दुर्बल शरीर को, गुजराती पगड़ी बांधे जरा भी प्रभावित नहीं। माता-पिता उसके क्लब अखाड़ों को लेकर परेशान

''ठाकुर परिवार की स्त्रियाँ'' (तृतीय भाग)

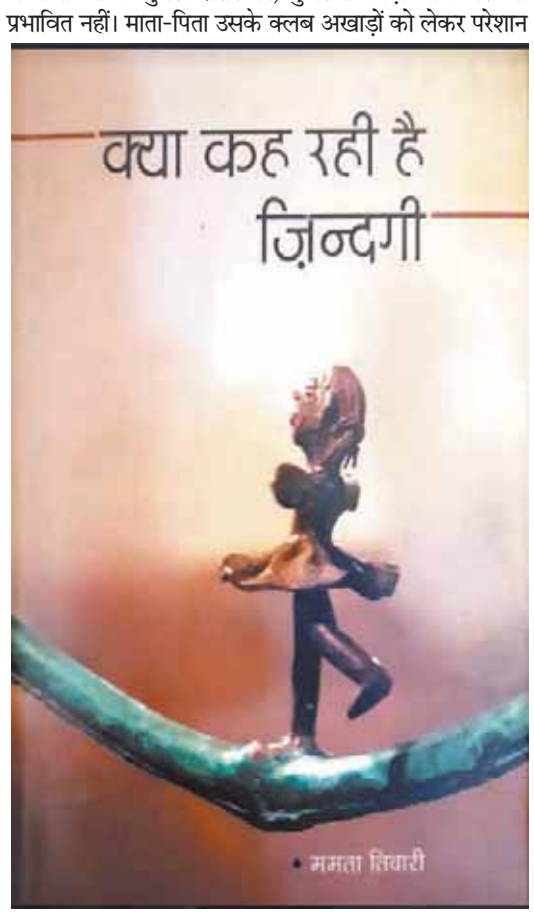

थे। लाला लाजपत राय ने उन्हें स्वदेशी के प्रचार का पर ध्यान लगाने को कहा वो उन्हें सही लगा और सरला देवी ने ''लक्ष्मी भंडार'' खोला जिसमें बंगाल के भिन्न जिलों से हाथ की बनी चीज़ें कपड़े साड़ियों बेची जाने लगी यूँ ठाकुर परिवार की स्त्रियों ने बंगाल की स्त्रियाँ आगे बढ़ाया सरला देवी ने कलकत्ता में स्टोर बहू बाजार खोला यहीं नहीं अब वे ब्राह्म समाज के उत्सव में स्वदेशी कपड़े नागरा जूतियाँ पहनकर जाती। कांग्रेस अधिवेशन ने लक्ष्मी भंडार को मेडल दिया जिसे वो साड़ी में ब्रूच की तरह लगाने लगी चूंकि ये कथा गांधी जी सुन रहे थे तो उन्होंने कहा उनकी पत्नी अभी तक स्वदेशी नहीं पहनती। सरला इतनी अभिभूत थी गांधी जी के संपर्क से कि उन्होंने तय किया वे गांधी जी के साथ पंजाब के दौरे में स्वदेशी पहनेंगी। सरला देवी ने भारती के लेखकों को रचना के लिये पारिश्रामिक देना शुरू किया उनका सबसे सुखद प्रकाशन रहा बर्मा में रहने शरतचंद्र ने ''बड़ी दीदी'' लिखकर भारती में भेज दी। इसी बीच विवेकानंद जी उनकी मुलाकात हुई टैगोर परिवार थोड़ा निराश हुआ कि वे रामकृष्ण परमहंस के साथ काली मूर्ति पूजा करते थे पर वे भारत माँ की पूजा का आहवान भी करते थे। सरलादेवी ने डरना नहीं सीखा था उन्होंने जो बातें विवेकानंद की पसंद नहीं थी मुँह पर कह दी पर प्लेग में मदद के लिये विवेकानंद जी के साथ बेलूर में बराबरी से खड़ी रही। अभिभूत विवेकानंद ने प्रस्ताव रखा वे उनके साथ विदेश चल कर हमारी प्राचीन संस्कृति और आध्यात्मिकता का संदेश दे उसने मन कर दिया बाद में उनका परिवार बालीगंज रहने आया जो अंग्रेजीदा बंगाली सोसाइटी का हिस्सा बन गया सरला के नाम बहुतों से जुड़े नानामोशाय की मृत्यु के बाद उन्होंने तिब्बत जाना तय किया पर उनका विवाह कर दिया सरला इसी बीच गांधी मय होती जा रही थी और उसने निश्चय किया वे स्वयं के बेटे दपिक को गांधी के सानिध्य में साबरमत आश्रम में रखेगी उनकी गिरफ्तारी के बाद चलने लगी सरला देवी पति का मिस कर रही थी। रवींद्र के सानिंध्य से युवको ने बंगाल पार्टीशन को लेकर राखी के सूत बांधे ये प्रोजेक्ट सरला देवी का था जिस संस्था को उसने बड़ी मेहनत से बढ़ाया था उसने स्त्री को दरकिनार कर दिया मामा इंडियन सिविल सर्विस में थे उन्होंने सरला के प्रति बिटिश का विरोध देख घरवालों से कह उसका विवाह पंजाब करवा दिया। गांधी जी की सरला के घर में रहने से सरला पति का गम भूल रही थी उनकी बातें चिट्ठियाँ अगले पार्ट में बता पाऊँगी पर जीवन के अंतिम क्षणों तक वे गांधी जी के हर कार्यक्रम में उपस्थित रही। अभी तक वे अपना जीवन अपनी मर्जी से जी रही थी। उनके पति के जेल से आने के बाद उन्होंने महसूस किया सरला देवी गांधी जी के प्रभाव में घर छोड़ने का मन बना रही थी रामदत्त जी को उनका देश के लिये काम करना पसंद था। इसी बीच गांधी जी के साथ उनकी चिट्ठियों का आदान प्रदान बहुत बढ़ गया। गांधी के सरला को लिखे अस्सी से ज़्यादा पत्र उपलब्ध है पर सरला देवी के चार पांच पत्र बचे जो गांधी की छोटी बहू ने जला दिये पति की मृत्यु के बाद वो बहुत दुखी हुई। बीच बीच में गांधी जी से उनका मतभेद भी रहा वो सार्वजनिक रूप से उन्हें अपनी दूसरी आध्यात्मिक पत्नी कहते थे। बाद मे सरला देवी की मृत्यु के बाद गांधी जी के साथ आश्रम में अंग्रेज और आठ साल रही उनका नाम गांधी जी ने सरला बहन दिया। गांधी जी सरला देवी को मित्र बहन, आध्यात्मिक पत्नी, प्रेमिका सब स्वीकार्य था वहीं बात पुनः उठी ?

1. जिस सरला देवी चौधरानी की बौद्धिक प्रतिभा और देश की आज़ादी के यज्ञ में खुद को आहुति बनाने का संकल्प देख गांधी ने अपनी आध्यात्मिक पत्नी का दर्जा दिया उसका नाम इतिहास के पन्नों में कहाँ दर्ज है।
2. जिस सरलादेवी की शिक्षा, तेजस्विता से मुग्ध हो विवेकानंद उन्हें अपने विदेश ले जाना चाहते थे उसे इतिहास ने बड़े नामों की गल्प लिखते समय हाशिए पर तक तक क्यों नहीं दी
3. कलकत्ता के जोड़ासांको के टैगोर परिवार की संस्कृति में पली बढ़ी सरला देवी ने अपने मामा रवींद्र नाथ टैगोर के साथ वंदेमात्रम की धुन रची यह किसने याद रखा
4. गांधी के असहयोग आंदोलन पर सरला के उठाये सवाल सहन ना हुये चुभते हुये सवाल सरला ने बार बार किये कांग्रेस ने औरत को कानून तोड़ने के लिये आगे रखा कानून बनाते वक्त क्यों नहीं अलका सरावगी ने कुल बारह अध्याय लिखे जिसमें बाद के 6-7 अध्याय सिर्फ सरला देवी गांधी के पत्राचार, सम्मेलन, प्रेम मतभेद के है। सरला की बेबाकी ने गांधी के उन पक्षों को भी डिस्कस किया जो कोई पूछ नहीं सकता था-फिलहाल यहीं कह रही है ज़िंदगी

प्रिय संग: बतख के बच्चे की विभिन्न मुद्राएं

फोटो: ऋतुराज बुड़ावनवाला खाचरौद

//भाषान्तर//

अनुवाद मणि मोहन

भाषान्तर में आज विश्व विख्यात लेखक ख़लील जिब्रान की एक रचना का अनुवाद।

पैगम्बर और बच्चा

एक दिन पैगम्बर शरीअ जब एक बाग घूम रहे थे तों वहाँ उनकी मुलाक़ात एक बच्चे से हुई । वह बच्चा दौड़ता हुआ उनके पास आया और बोला, सुप्रभात जी !

पैगम्बर ने कहा, सुप्रभात,तुम यहाँ अकेले आए हो?

इस पर बच्चा हँसते हुए बोला, ÷अपनी आया से पीछा छुड़ाकर आया हूँ। अब वह सोच रही होगी कि मैं उन झाड़ियों के पीछे कहीं छुपा हूँ, पर... मैं... मैं तो यहाँ हूँ। फिर पैगम्बर की ओर देखते हुए बोला, अरे आप भी तो यहाँ अकेले हैं, आपकी आया साथ नहीं है क्या?

ओ... हाँ, यह अलग बात है, पैगम्बर ने कहा, ÷हकीकत तो यह है कि मैं भी अक्सर उससे पीछा नहीं छुड़ा पाता, और अभी जब मैं बगीचे में हूँ तो वह मुझे झाड़ियों के पीछे कहीं ढूँढ़ रही थी।

बच्चा तालियाँ बजाते हुए खिलखिला उठा, वाह ... तो आप भी मेरी तरह जानबूझकर खो गए हैं। इस तरह लापता हो जानें में कितना मज़ा आता है ना!... पर आप हैं कौन ?

लोग मुझे पैगम्बर शरीअ के नाम से जानते हैं, उन्होंने उत्तर दिया, तुम कौन हो?

मैं... मैं बस मैं हूँ, बच्चे ने कहा, मेरी आया मुझे ढूँढ़ रही है परन्तु वह नहीं जानती कि इस वक़्त मैं कहाँ हूँ।

तब पैगम्बर ने आसमान की ओर देखते हुए कहा, मैं भी थोड़ी देर के लिए अपनी आया के चंगुल से निकल भागा था लेकिन अब वह मुझे ढूँढ़ लेगी।

मुझे पता है ... मैं भी ढूँढ़ लिया जाऊँगा। बच्चे ने मासूमियत से कहा।

तभी बच्चे का नाम लेकर पुकारती एक स्त्री की आवाज़ सुनाई दी।

देखा बच्चे ने कहा मैंने आपसे कहा था ना मेरी आया मुझे जरूर ढूंढ़ लेगी।

तभी वहाँ एक और आवाज सुनाई दी, आप कहाँ हैं, पैगम्बर ?

देखा मेरे बच्चे, उसने मुझे ढूंढ़ लिया। पैगम्बर ने कहा और फिर आवाज़ की दिशा की तरफ मुँह करके उत्तर दिया, मैं यहाँ हूँ।

अब तो बातों में... किमाम की खुशबू!

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

पा किस्तान के मेहमान ने कहा- क्या यहां किमाम मिलता है तो तुंरत जवाब दिया- यहां सब मिलता है, जो वहां मिलता है। पहली ही फुर्सत में किमाम को हासिल करने का इरादा पक्का कर लिया। जब चार साल पहले लंदन के ल्यूटन शहर के पास धरमुकाम बना तो लोगों ने कहा- अब तो तुम्हें खाने-पीने की देसी चीजों की चिंता ही नहीं है, वहां सब मिलेगा।

जब तक यूके के पूर्वी समंदर के किनारे के गांव में रहती थी, तब वहां लंबे समय तक देसी दुकान पचास किलोमीटर दूर थी और छोटी-सी दुकान थी जो आखिरी के दौर में खुल गई थी। पुराने जमाने में लोग जिस तरह हाट का इंतजार करते थे, कि उसी तर्ज पर दुकान वालों के मैसेज से तय होता था कि घर में शाम को देसी खाना बनेगा या कुछ और। सही मायनों में जब तक इन खाने-पीने की चीजों का इंतजार नहीं किया था, तब तक भारत से दूरी भी खास नहीं लगती थी, लेकिन उस दूरदराज के गांव में ऐसे-ऐसे स्वाद याद आते थे कि पूछिए मत!

जब से ल्यूटन और कई मायनों में लंदन के नजदीक रहना शुरू किया

है, ऐसी रईसी महसूस होती है कि क्या बताएं। एक वो दिन थे, जब सब्जी लाने के लिए हफ्ते-दस दिन बाद मौका लगता था और यह दिन है कि मुंह उठाओ और सामान ले आओ। इंदौर में कटहल और सूरन के लिए खोज करना पड़ सकती है लेकिन यहां मिल रहा है। इसी के भरोसे किमाम का वादा कर दिया। अगले दिन बस पकड़ उस इलाके में पहुंच गए, जिसे बरी पार्क यानी मिनी-पाकिस्तान कहा जाता है और पहली ही दुकान में दाखिल हुए कि यूं हमने किमाम का नाम लिया और यूं अगले ने शीशी पेश की इसके आगे जो हुआ, बेहतरीन किस्सा है।

सुबह दुकान में झाड़ू ही लग रही थी और हम दाखिल हुए। जैसे ही किमाम का नाम लिया, उसने तुरंत कहा नया ब्रांड होगा, मैंने तो सुना नहीं, उसे समझाया कि किमाम आम तौर से लोग पान में लगा कर खाते हैं तो आसपास वालों ने तुरंत पान के पत्ते, सुपारी और मुखवास जहां थे, वहां पहुंचा दिया, पचासों तरीके के मुखवास रखे थे, सुपारी भी कई तरह की थी, कत्था और चूना भी था, लेकिन बस किमाम नहीं था। खैर, अगली दुकान पुराने जमाने की लग रही थी और वहां से भी अपना-सा मुंह लेकर लौट आए। इसके बाद हर छोटी-बड़ी दुकान पर दोहराया- क्या यहां किमाम है? बता सकते हैं कि किमाम कहां मिलेगा? क्या पान में डालने वाला किमाम रखते हैं? लेकिन कहीं से भी हां में जवाब नहीं आया। हां एक-दो जगह यह जरूर कहा गया कि बीस साल पहले रखा करते थे। ग्राहक कम हो गए तो बंद कर दिया है। एक जगह तो 'बाबा 120' पकड़ाने की कोशिश भी हुई।

लगभग चार साल होने आए हैं इस इलाके में रहते, लेकिन अभी तक बरी पार्क में दुकान-दुकान भटकने का मौका नहीं आया था। दो घंटे से ज्यादा दुकान दर दुकान भटकने के बाद यह एहसास हुआ कि अब इस मिशन को लंदन ही ले जाना होगा, लेकिन इसी बहाने अपने नजदीक के शहर के देसी इलाके और सेंटर को इस कदर नजदीक से देखने का मौका मिल गया। यह जान लिया कि कटहल का भाव क्या है और आम कितने की पेटी है। साथ ही महसूस हुआ कि लोग गानों के शब्दों का ध्यान बिलकुल ही नहीं रखते हैं, वरना 'कजरारे' गाने में गुलज़ार साब ने लिखा है- 'तेरी बातों में किमाम की खुशबू है' और लोगों को याद दिलाने पर भी याद नहीं आया कि इस गाने में किमाम का जिक्र भी है। अपने आस पास नजर डालिए, ऐसा क्या है जो बहुत दिनों से दिखाई नहीं दिया, सुना नहीं-चखा नहीं। न सिर्फ उन्हें याद करें, बल्कि उनके लिए कुछ दूर जाना पड़े तो जाएं, क्योंकि पता नहीं कब वो बाजार से गायब हो जाए और दर-ब-दर भटकना पड़े।